छत्तीसगढ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
हिन्दी मासिक मुख पत्र
मास : आषाढ़-श्रावण, संवत् 2074
जुलाई 2017

ओ३म्

अंक 142, मूल्य 10

अग्निदूत

अग्निं दूतं वृणीमहे. (ऋग्वेद)

माँ भारती का सच्चा सपूत
बालगंगाधर तिलक
जयन्ती 23 जुलाई

शहीदों का सरताज
चन्द्रशेखर आजाद
जयन्ती 23 जुलाई

21 जून17 को वैदिक यज्ञ योग प्रचार समिति रायपुर, महर्षि दयानन्द आर्य उ.मा. विद्यालय टाटीबन्ध रायपुर एवं अन्य स्थानों में सम्पन्न तृतीय अंतराष्ट्रीय योग दिवस की चित्रमय झलकियाँ

महर्षि दयानन्द आर्य उ.मा. विद्यालय टाटीबन्ध रायपुर

अग्निदूत

हिन्दी मासिक

राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक विचारों की मासिक पत्रिका

विक्रमी संवत् - २०७४
सृष्टि संवत् - १,९६,०८,५३,११९
दयानन्दाब्द - १९४

: प्रधान सम्पादक :
आचार्य अंशुदेव आर्य
प्रधान सभा
(मो. ०७०४९२४४२२४)

★

: प्रबंध सम्पादक :
आर्य दीनानाथ वर्मा
मंत्री सभा
(मो. ९८२६३६३५७८)

★

: सहप्रबंध सम्पादक :
श्री जोगीराम आर्य
कोषाध्यक्ष सभा
(मो. 9977152119)

★

: व्यवस्थापक :
श्री दिलीप आर्य
उपमंत्री (कार्यालय) सभा
मो. ९६३०८०१२५७

★

: सम्पादक :
आचार्य कर्मवीर
मो. ९७५२३८८२६७

पेज सज्जक :
श्रीनारायण कौशिक

- कार्यालय पता -
छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द परिसर, आर्य नगर, दुर्ग (छ.ग.)४९१ ००१
फोन : (०७८८) ४०३०९७२
फैक्स नं. : ०७८८-४०११३४२ ;
e-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com

वार्षिक शुल्क - १००/- दसवर्षीय-८००/

वर्ष - १३, अंक १ | ओ३म् | मास/सन् - जुलाई २०१७

श्रुतिप्रणीत-सिद्धधर्मवह्निरूपतत्त्वकं,
महर्षिचित्त-दीप्त वेद-सारभूतनिश्चयं ।
तदग्निसंज्ञकस्य दौत्यमेत्य सज्ञसज्ञकम् ,
सभाग्निदूत-पत्रिकेयमादधातु मानसे ।।

विषय - सूची

			पृष्ठ क्र.
१.	माण्डूकों का वेद-गान	स्व. रामनाथ वेदालंकार	०४
२.	आखिर कैसे करें बच्चों में सृजन-क्षमता का विकास	आचार्य कर्मवीर	०५
३.	भ्रष्टाचार पर लगाम लगेगी	डॉ. मोनिका शर्मा	०८
४.	भारत में इतने गद्दार क्यों ?	से.नि. मे.ज. मृणाल सुमन	१०
५.	गुरु विरजानन्द से शिक्षा, सत्यार्थ प्रकाश का लेखन और आर्य समाज की स्थापना ऋषि दयानन्द जीवन के प्रमुख महान कार्य	मनमोहन कुमार आर्य	१३
६.	स्वर्ग कामो यजेत्	नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'	१६
७.	पाप हमसे दूर रहें !	महात्मा चैतन्य मुनि	१८
८.	संस्कार क्यों ?	पं. रामदेव शर्मा	२१
९.	ऐसे धर्म को धिक्कार है, जो हमें सत्यता की ओर जाने से रोके	विवेक प्रिय आर्य	२४
१०.	तमसो मा ज्योतिर्गमय	आनन्द प्रकाश गुप्त	२६
११.	भारतीय राष्ट्रवादी, शिक्षक व समाज समाज सुधारक-बालगंगाधर तिलक	अनिल आर्य	२९
१२.	मिसाईल मैन और जनता के राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम (मधुर स्मृति)	ऋषि कुमार आर्य	३०
१३.	समाचार दर्पण		३२

सूचना : छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का अणुसंकेत
(ई-मेल) E-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com
(सम्पादक) E-mail : shastrikv1975@gmail.com

सूचना : हमारा नया वेब साइट देखें
Website : http:/www.cgaryapratinidhisabha.com

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है।

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक - आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग के वैदिक मुद्रणालय से छपवाकर प्रकाशित किया गया।

मण्डूकों का वेद-गान

भाष्यकार - स्व. डॉ० रामनाथ वेदालङ्कार

संवत्सरं शशयानाः, ब्राह्मणा व्रतचारिणः।
वाचं पर्जन्यजिन्विता, प्र मण्डूका अवादिषुः॥ ऋग्. ७.१०.३.१

ऋषिः मैत्रावरुणिः वसिष्ठः। देवता मण्डूका। छन्दः अनुष्टुप्।

● (संवत्सरं) वर्ष-भर (शशयानाः) (अपने-आपको ज्ञान से) तीक्ष्ण करते हुए, (ब्राह्मणाः) वेद का अध्ययन करनेवाले, (व्रतचारिणः) ब्रह्मचारी (मण्डूकाः) मण्डूक-तुल्य ब्रह्मचारी (पर्जन्य-जिन्विताः) पर्जन्य या आचार्य से प्रेरित (वाचं) वाणी को (अवादिषुः) बोल रहे हैं।

वर्षा की सुहानी ऋतु आई है। ताल-सरोवर वर्षा-जल से भर गये हैं। वर्ष-भर से जो व्रतधारी ब्राह्मणों के समान मौन धारण कर भूमि के अन्दर बिलों में सोये पड़े थे, वे मेंढक पर्जन्य से प्रीत वाणी बोल रहे है। आकाश में बादलों का रौरवगान, भूमि पर वर्षा का रिम-झिम संगीत, और सरोवरों में मेंढकों का समूह गान हो रहा है। दादुर-धुनि ऐसे लग रही है। मानों वटु-समुदाय मिलकर सस्वर वेदपाठ कर रहा हो। सचमुच वेदपाठी ब्रह्मचारी भी तो मण्डूक होते हैं। मेंढक वर्षा-जल में मज्जन करते हैं, ब्रह्मचारी ज्ञान-जल में। मेंढक वर्षा-जल से मुदित और तृप्त होते हैं, ब्रह्मचारी ज्ञान-वर्षा से। मेंढकों की त्वचा मण्डित होती है, ब्रह्मचारी का आत्मा। मेंढकों का सरोवर-गृह कमल-पुष्पों से मण्डित होता है, ब्रह्मचारी का गुरुकुल-गृह वेद की ऋचाओं से।

प्राचीन काल में वर्षा ऋतु में ही वेदाध्ययन आरम्भ किया जाता था। श्रावणी पूर्णिमा का वेदपाठ का उपाकर्म करके साढ़े चार या पांच पास बाद उत्सर्जन होता था। इस काल में विशेष रुप से वेदाध्ययन ही होता था। वर्ष के शेष मासों में इस काल में पठित वेद की पुनरावृत्ति तथा वेदांगों का अध्ययन चलता था। एवं वर्षभर जो वेदपारायण तथा वेदांगों के अध्ययन से स्वयं को ज्ञान से तीक्ष्ण करते रहे हैं और ब्रह्मचर्याश्रम के व्रतों का पालन करते रहे हैं, वे मण्डूक-ब्रह्मचारी ज्ञानवर्षी-पर्जन्य-आचार्य से तथा वर्षाऋतु के पर्जन्य से प्रेरित वेदवाणी का उच्चारण कर रहे हैं, सस्वर वेदपाठ तथा वेदार्थ का अध्ययन कर रहे है। यज्ञशाला में मुखरित होती हुई इन मण्डूकों की वाणी सुनकर श्रोताओं के हृदय में अपूर्व उल्लास का अनुभव हो रहा है, इनकी ऋचाओं से गूंजती हुई दिशाएँ स्वर्गीय सुख और शान्ति को प्रतिध्वनित कर रही है। हे मण्डूक बटुओं! हे वेद के गायकों! अपना यह सुरीला वेद-गान सदा ही गाते रहो।

संस्कृतार्थ :- १. शशयानाः शिश्यानाः (निरु. ९.४)। शो तनूकरणे कानच्। २. ब्रह्म वेदम् अधीयते विदुर्वा इति ब्राह्मणाः। तदधीते तद्वेद अर्थ में ब्रह्मन् से अण् प्रत्यय। ३. जिन्वति गत्यर्थक (निघं. २.१४)। ४. मण्डूका मज्जूकाः मज्जनात्, मदतेर्वा मोदतिकर्मणः, मन्दतेर्वा तृप्तिकर्मणः। मण्डयतेरिति वैयाकरणाः, मण्ड एवामोक इति वा (निरु. ९.४)

आखिर कैसे करें बच्चों में सृजन-क्षमता का विकास

बच्चे माता-पिता के लिए सर्वोत्तम उपहार होते हैं, इसलिए वे किसी शिक्षण संस्था में भेजकर निश्चिन्त हो जाते हैं कि हमने अच्छी जगह प्रवेश करा दिया किन्तु इतना ही पर्याप्त नहीं है उसे उपयोगी बनाने के लिए और भी आवश्यक कदम उठाने जरुरी हैं। क्यों कि बच्चों को समय एवं उद्देश्यानुसार बगैर ढाले उनसे वाञ्छित लाभ के बजाय हानि ही होगी। बच्चे स्वभाव से ही सृजनशील होते हैं। उनके सामने जो कुछ भी है वह सब कुछ उनके लिये कौतूहल की चीज है। बच्चे सभी चीजों के विषय में जल्दी से जल्दी, अधिक से अधिक जानकारी हासिल कर लेना चाहते हैं। उनकी जिज्ञासा ही है जो उन्हें हरदम सचेत रखती है। सफर में जब आप ऊँघते हैं उस समय बच्चा खिड़कियों से बाहर का दृश्य देख रहा होता है। इन दृश्यों को देखते हुए उसके मन में अनेकानेक सवाल उठते जाते हैं। यदि उसके अभिभावक बाल मनोविज्ञान के जानकार हैं, बच्चे की जिज्ञासा में रुचि लेते हैं तो बच्चा अभिभावक से सवाल करता है। इस तरह उसकी जानकारी बढ़ती जाती है और उसके मस्तिष्क का स्वाभाविक विकास होता है।

इसके विपरीत ज्यादातर बच्चों को ऐसा माहौल नहीं मिलता, जहां वे अपनी शंकाओं का समाधान कर सकें। ऐसे बच्चे अपनी जिज्ञासाओं को मन ही मन खाते जाते हैं और फिर आगे चलकर उनके मस्तिष्क में जिज्ञासाएँ जन्म लेना ही बन्द कर देती है। ऐसे बच्चों का स्वाभाविक मानसिक विकास सम्भव नहीं है। यही नहीं उनमें अन्वेषण और खोजपरक दृष्टि का अभाव हो जाता है।

बच्चों की शिक्षा की आधुनिक मांटेसरी और किंडरगार्टन पद्धति का विकास इसी परिप्रेक्ष्य में हुआ है। पद्धतियों में बच्चा कक्षा में निष्क्रिय श्रोता नहीं होता। अध्यापक कक्षा का वातावरण कुछ इस तरह बनाता है कि बच्चा अधिक से अधिक सक्रिय रहे। बच्चा अधिक से अधिक सवाल करता है। यह शिक्षक का कौशल होता है कि बच्चों के सवालों का जवाब भी खोजते हैं। शिक्षक की भूमिका गाइड की होती है।

तीन साल तक का बच्चा एकाकी खेलना पसंद करता है। जबकि इससे अधिक आयु के बच्चे समूह में खेलना पसंद करते हैं। अभिभावक और शिक्षक को बच्चों की इस तरह की प्रवृत्तियों की जानकारी होनी चाहिए। एकाकी खेलने वाले बच्चों को समूह में नहीं रखना चाहिए। बल्कि उन्हें इस तरह के खिलौने दिये जाते हैं जिससे वे एक ही स्थान पर खिलौनों से खेल सके। इसके विपरीत बड़े बच्चे खेल-कूद एवं अन्य काम समूह में करना पसंद करते हैं। ऐसी प्रवृत्ति की न जानने वाले कई बार बच्चों को एकाकी रहने, खेलने और पढ़ने की सलाह देते हैं। जो कि अनुचित है।

कई बार बच्चों के छोटे मोटे झगड़ों को लेकर अभिभावकों में खूनी संघर्ष तक हो जाते हैं। जबकि वही बच्चे कुछ ही देर बाद फिर से आपस में मिलजुलकर खेलना कूदना शुरु कर देते हैं। इस तरह बच्चों की प्रवृत्ति को न जानकर लोग बच्चों के लिये व्यर्थ ही परेशानी मोल ले लेते हैं।

वास्तविकता यह है कि आज न तो घर में और न स्कूल में ही ऐसा वातावरण है जहां बच्चों की सृजनात्मक शक्ति का विकास हो सके। स्कूलों में किताबी सूचनाएँ ठूंस-ठूंस कर बच्चों के मन मस्तिष्क में भरी जाती है। स्कूलों में खेलकूद एवं अन्य पाठ्यसामग्री क्रियाओं का पूर्ण अभाव देखा जाता है। करके सीखने के सिद्धान्त केवल किताबों में ही सीमित रह गए हैं। विज्ञान-शिक्षा जो पूर्णतया प्रायोगिक ज्ञान पर ही आधारित है, वहां भी सैद्धान्तिक ज्ञान ही अधिक दिया जाता है। विज्ञान के उपकरण और प्रयोगशालाओं का पूर्ण अभाव देखा जा रहा है। जहां ये चीजें हैं भी वहां प्रशिक्षित शिक्षक का अभाव है। यही कारण है कि इक्कीसवीं सदी की दहलीज पर पहुंचे इस देश में अभी भी अधिकतर अन्धविश्वास का बोलबाला है। भूतप्रेत अभी भी यहां डेरा जमाए बैठे हैं। जाति-पाति जैसे दकियानूसी और सड़ीगली परम्पराएँ दिन दूनी रात चौगुनी रफ्तार से फल फूल रही है।

बच्चों की जिज्ञासाओं के स्वस्थ समाधान के लिए साहित्य की भूमिका महत्वपूर्ण है। लेकिन दुर्भाग्यवश आज हिन्दी क्षेत्र में बाल-साहित्य को दोयम दर्जे पर रखा जा रहा है। स्तरीय साहित्यकार बाल साहित्य लिखना अपनी तौहीन समझते हैं। जो कुछ साहित्य लिखा भी जा रहा है वह या तो बच्चों के स्तर से ऊपर का है या अवैज्ञानिक है। कामिक्स बच्चों में आज तेजी से लोकप्रिय हो रहे हैं। लेकिन कामिक्स की कथावस्तु में भूतप्रेत, सुपरमैन, परियां, अलौकिक घटनाएं और चमत्कार ही छाये हुए हैं। कामिक्स में जो कहानियां लिखी होती है उनका व्यवहारिक जीवन से कोई सरोकार नहीं होता। फलतः ऐसे कामिक्स बच्चों के कोमल मस्तिष्क के विकास के बजाय उसमें विकृति ही पैदा करते हैं।

खेलकूद एक ऐसा माध्यम है जिससे बच्चों का शारीरिक और मानसिक विकास बहुत अच्छा और स्वाभाविक ढंग से होता है। लेकिन दुर्भाग्यवश हमारे बच्चों में बहुत कम को ऐसा वातावरण प्राप्त है। स्कूलों में यद्यपि खेल के लिए अलग से शिक्षक जरुर रखे जाते हैं लेकिन खेल को परीक्षा में कोई महत्व नहीं दिया जाता। जिससे बच्चे खेल को उतनी वरीयता नहीं देते जितनी की पाठ्यक्रम को। छोटे बच्चों के लिए सरकारी स्कूलों में तो छोटे खेल के मैदान होते हैं। लेकिन कुकुरमुत्ते की तरह उग आए नर्सरी स्कूलों में खेल के मैदान या खेलकूद के वातावरण का तो कोई सवाल ही नहीं। अभिभावक या समाज की दृष्टि में जो स्कूल जितना ही अच्छा माना जाता है वहां खेलकूद की उतनी ही उपेक्षा होती है।

वास्तव में यह बहुत ही गम्भीर बात है। ये ही कुछ मूल कारण है जिनके कारण ओलंपिक जैसी विश्वस्तरीय खेल स्पर्धाओं में हमारा देश शून्य से आगे नहीं बढ़ पाता। बालक ही देश के भावी निर्माता व कर्णधार होते हैं तथा उनके ऊपर ही देश का भविष्य निर्भर होता है, अतएव उनमें विभिन्न प्रकार की रचनात्मक-प्रवृत्तियां उत्पन्न कर उनकी सृजन-क्षमता का विकास करना परमावश्यक माना गया है। इस सृजन-क्षमता के विकास का दायित्व बालकों के अभिभावकों एवं अध्यापकों पर होता है। अभिभावकों की भूमिका का प्रतिपादन इसलिये किया गया कि बालक चौबीस में १८ घंटे उन्हीं के सम्पर्क में रहता है। शेष छः घण्टे वह अध्यापकों के सान्निध्य में गुजारता है। इस प्रकार अध्यापक की अपेक्षा तीन गुना अधिक समय वह अभिभावक को देता है। इसीलिए सृजन-प्रतिभा के विकास में अभिभावक का योगदान महत्वपूर्ण माना गया है।

कुछ न कुछ सृजन-क्षमता प्रत्येक बालक के संस्कार में होती है। आवश्यकता केवल उसके विकास की पड़ती है। अपनी रुचि का विषय होने के कारण बालक उस विषय में दिये गये ज्ञान को शीघ्र आत्मसात् कर लेता है क्योंकि उस विषय में उसकी सृजन-क्षमता विकासोन्मुखी होती है। कुशल शिक्षक बालक की रुचि एवं उसकी प्रकृति प्रदत्त प्रतिभा का पूर्ण लाभ उठाते हुए तदनुकूल उसकी सृजन-क्षमता का विकास करता है। रुचि एवं

प्रकृति के प्रतिकूल सृजन के विकास का यत्न करना ऊसर भूमि में बीज बोने के समान ही है। इस यत्न में न तो शिक्षक को सफलता प्राप्त होती है, न ही बालक को।

कुछ बालक छात्रावस्था से ही साहित्य में अभिरुचि रखते हैं। उनमें काव्य, कहानी, निबन्ध, नाटक या समीक्षा लेखन की पूर्ण प्रतिभा होती है। कुछ वाद-विवाद या भाषण देने की कला में पटु होते है। ऐसे साहित्य-प्रेमी बालकों को उनकी रुचि और क्षमता के अनुसार साहित्य के किसी एक क्षेत्र का विस्तृत ज्ञान देकर उन्हें स्वस्थ-साहित्य-सृजन के लिये प्रोत्साहित करना चाहिये, इस प्रकार देश में अनेक कवि, लेखक, समीक्षक एवं तर्कशास्त्री उत्पन्न होंगे जो देश की साहित्यिक प्रगति में योगदान करके इसका गौरव बढ़ायेंगे। कलायें दो प्रकार की होती है - १. ललित कला. २. उपयोगी कला। ललित कला में साहित्य, संगीत, गायन, वादन एवं चित्र कला का नाम विशेष उल्लेखनीय है। उपयोगी कक्षा में बढ़ईगीरी, लुहारगीरी, सुनारगीरी, राजगिरी, चर्मकारी एवं बुनकर का नाम आता है। दोनों प्रकार की कलायें मानव जीवन के लिये आवश्यक होती है। ललित कलाओं से आनन्द, यश और धन की प्राप्ति होती है तथा उपयोगी कलाओं से जीविका की। देश की बहुमुखी प्रगति के लिये दोनों प्रकार की कलाओं का सृजन आवश्यक होता है। अतः अध्यापकों को चाहिये कि जिस छात्र की रुचि जिस कला में हो उसे उस विषय का सम्यक् ज्ञान देकर उसकी सृजन क्षमता का विकास करें।

अनेक बालक विज्ञान के प्रति आरम्भ से ही जिज्ञासु होते हैं। वे प्रकृति के विभिन्न क्रिया-कलापों एवं उसकी शक्तियों का सदुपयोग कर संसार को कोई नया आविष्कार दे जाने की क्षमता रखते हैं। उनमें समस्त पदार्थों, रसायनों और जीवों का सूक्ष्म अध्ययन करना उनके स्वभाव का अंग बन जाता है। ऐसे छात्रों की वैज्ञानिक प्रतिभा का लाभ उठाकर उन्हें उचित निर्देशन द्वारा वैज्ञानिक-सृजन के लिये प्रोत्साहित किया जा सकता है। इस प्रकार संसार को अच्छे वैज्ञानिकों और अनेक नये आविष्कारों की प्राप्ति होगी, जिससे मानव-मात्र के कल्याण का पथ प्रशस्त होगा।

बालकों में जोड़-तोड़ की प्रवृत्ति स्वाभाविक रुप से होती है। यह प्रवृत्ति ही तकनीकी सृजन की जन्मदायिनी है। विभिन्न मशीनों के पूर्जों का उपयोग कर कोई नई मशीन बनाना, या पुर्जों का बनाना, बिजली, पेट्रोल, डीजल आदि का उन कार्यों में उपयोग करना जिनमें उनका पहले प्रयोग न किया गया हो। यह सब तकनीकी सृजन के अन्तर्गत आते हैं। कल-पुर्जों, वाहनों और संचार साधनों की सफाई या मरम्मत करना, ठोस-द्रव और गैस के प्रयोग से कोई उपयोगी उत्पादन करना भी तकनीकी सृजन कहा जायेगा। कुल बालकों में पढ़ने लिखने की प्रवृत्ति कम, टेक्नोलॉजी की अधिक होती है। उन्हें इसी ओर मोड़ना चाहिए। टेक्नोलॉजी विज्ञान का ही एक अंग है। देश की औद्योगिक प्रगति के लिये इस रुचि के बालकों में तकनीकी सृजन की क्षमता का विकास करना कुशल शिक्षक का काम है।

देश की आर्थिक प्रगति के लिये विभिन्न उद्योग धंधो का विकास आवश्यक होता है। उद्योग-धंधों का विकास तभी संभव होगा, जब बालकों में औद्योगिक सृजन की क्षमता उत्पन्न की जाए। औद्योगिक सृजन में बड़ी बड़ी फैक्ट्रियों के उत्पादन की ही नहीं, छोटे-छोटे कुटीर उद्योगों की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। कुछ बालकों में नौकरी या खेती की बजाय उद्योग धंधों की अभिरुचि अधिक पाई जाती है। अध्यापक को चाहिये कि ऐसे बालकों के स्वभाव का सूक्ष्म दृष्टि से अध्ययन करें कि वह किस उद्योग में अभिरुचि रखता है ? जिसमें उसकी रुचि हो उसी उद्योग के विभिन्न आयामों का ज्ञान देकर उसे औद्योगिक सृजन में दक्ष करना चाहिये। अभी पिछले दिनों हरयाणा सोनीपत डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल के कक्षा १२वीं में पढ़ने वाले छात्र विकास गुप्ता ने १८ किताबें लिखकर एक कीर्तिमान कायम किया है। इस प्रकार हम चाहते है कि हमारे देश फिर से विश्व गुरु बनकर संसार का मार्गदर्शन करें तो हमें हमारी पीढ़ी को देश की आवश्यकता अनुरुप प्रशिक्षित करना होगा, तभी विश्व मानचित्र पर एक सशक्त समृद्ध व खुशहाल राष्ट्र बना पाएंगे, अन्यथा कोई मार्ग नहीं।

- आचार्य कर्मवीर

सामयिक

भ्रष्टाचार पर लगाम लगेगी

- डॉ. मोनिका शर्मा

पचास साल पुराने नियम को बदलकर, सरकारी कर्मचारियों से जुड़े भ्रष्टाचार के मामलों की जांच पूरी करने के लिये छह महीने की समय सीमा तय कर दी है। केन्द्र ने यह फैसला काफी समय से लंबित पड़े मामलों की जांच में तेजी लाने के इरादे से किया है। इस सार्थक कदम के तहत कार्मिक और प्रशिक्षण विभाग (डीओपीटी) ने केन्द्रीय लोक सेवाएँ (नियम) १९६५ में संशोधन कर जांच के महत्वपूर्ण चरणों और जांच प्रक्रियाओं के लिये समय सीमा निर्धारित करने का निर्णय लिया गया है।

हमारे देश में सरकारी विभागों में मौजूद भ्रष्टाचार एक बड़ा दंश बना हुआ है। अफसोस कि इन महकमों में भ्रष्टाचार के मामले उजागर होने पर भी जांच और कार्रवाई की रफ्तार इतनी सुस्त रहती है कि भ्रष्ट कर्मचारी मौज मनाते रहते हैं। व्यवस्था की यही कमजोरी रिश्वतखोरी के मामलों को बढ़ावा भी देती है। ऐसे में सरकारी विभागों में भ्रष्ट कर्मचारियों को लेकर केन्द्र सरकार ने एक सराहनीय कदम उठाया है। पचास साल पुराने नियम को बदलकर, सरकारी कर्मचारियों से जुड़े भ्रष्टाचार के मामलों की जांच पूरी करने के लिये छह महीने की समय सीमा तय कर दी है। केन्द्र ने यह फैसला काफी समय से लंबित पड़े मामलों की जांच में तेजी लाने के इरादे से किया है। इस सार्थक कदम के तहत कार्मिक और प्रशिक्षण विभाग (डीओपीटी) ने केन्द्रीय लोक सेवाएँ (नियम) १९६५ में संशोधन कर जांच के महत्वपूर्ण चरणों और जांच प्रक्रियाओं के लिये समय सीमा निर्धारित करने का निर्णय लिया गया है।

रिश्वतखोरी के मामलों में जांच के ये नए नियम भारतीय प्रशासनिक सेवा, भारतीय पुलिस सेवा व भारतीय वन सेवा तथा कुछ अन्य श्रेणियों के अफसरों को छोड़कर अन्य सभी कर्मचारियों पर लागू होंगे। संशोधित नियमों के मुताबिक जांच प्राधिकरण को छह महीने के अंदर तहकीकात पूरी कर अपनी रिपोर्ट सौंपनी होगी। गौरतलब है कि अब तक भ्रष्टाचार से जुड़े मामलों की जांच के लिये कोई भी समय-सीमा निर्धारित नहीं थी। दरअसल, सरकारी विभागों में लंबित पड़े भ्रष्टाचार के मामले न केवल इस समस्या को बढ़ावा देने वाले हैं बल्कि व्यवस्था का मजाक बनाने वाले भी हैं। घूसखोरी के इन मामलों में गलती सामने आने पर भी बरसों बरस कार्रवाई और जांच के नाम पर कुछ नहीं होता। यही वजह है कि कुछ समय पहले केन्द्रीय सतर्कता आयोग ने सार्वजनिक क्षेत्र के सभी बैंकों, बीमा कंपनियों और केन्द्र सरकार के विभिन्न विभागों से भ्रष्टाचार के लंबित मामलों की जांच में तेजी लाने की बात कही थी। भ्रष्टाचार विरोधी निकाय ने सभी विभागों के मुख्य सतर्कता अधिकारियों को लिखा था कि वे भ्रष्टाचार की शिकायतों पर जांच रिपोर्टों में तेजी लाएँ, क्योंकि कुछ समय पहले सीवीसी की अपनी ओर से की गई पहल में सामने आया था कि कई सरकारी विभागों में बड़ी संख्या में भ्रष्टाचार के मामलों की जांच लंबित पड़ी हुई है। केन्द्रीय सतर्कता आयोग के आंकड़ों के मुताबिक, रेल्वे में भ्रष्टाचार के ७३०मामलों की जांच लंबित है, जिनमें ३५० वरिष्ठ अधिकारियों से जुड़े हैं। इसी तरह भारत संचार निगम लिमिटेड में ५२६, इंडिय ओवरसीज बैंक में २६८ और दिल्ली सरकार में भ्रष्टाचार के १९३ मामलों की जांच लंबित है। आंकड़े बताते हैं कि इसी तरह के १६४ मामले भारतीय स्टेट बैंक में, १२८ बैंक ऑफ महाराष्ट्र में लंबित है। साथ पंजाब नेशनल बैंक में १००, सिंडीकेट बैंक में ९१, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया में ५०, केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग में ४७, प्रसार भारतीय में ४१, कारपोरेशन बैंक में ३६, एयर इंडिया

में २६, इंडियन ऑयल कारपोरेशन लिमि. में ३० और यहां तक कि प्रधानमंत्री कार्यालय में दो मामले अनुशासनात्मक जांच के लिए लंबित है। ध्यान देने वाली बात यह भी कि इस सूची में रेलवे शीर्ष पर है। निःसंदेह दूसरे सभी महकमों के आंकड़े भी सामने आए आंकड़ों से कहीं ज्यादा ही है। वाकई, दुःखद है कि जिन सार्वजनिक सेवाओं पर आमजन का हक है उन्हें पाने या सरकारी दफ्तरों में अपना काम करवाने के लिए इस भ्रष्टाचार के दंश से जूझना पड़ता है। सरकारी कर्मचारियों के ऐसे में जागरुक नागरिक शिकायत तो कर सकते हैं पर, उन शिकायतों को ही ठंडे बस्ते में डाल दिया जाए तो कोई राह नहीं बचती। अफसोस है कि बरसों से यही होता आ रहा है। सजग नागरिक अब खुलकर इन सेवाओं के प्रति अपना आक्रोश जाहिर भी करते हैं पर सब कुछ जांच के नाम पर ही उलझकर रह जाता है। आंकड़े बताते है कि साल २०१५ की अपेक्षा साल २०१६ में विभिन्न सरकारी विभागों के खिलाफ भ्रष्टाचार की शिकायतों में ६७ प्रतिशत की वृद्धि हुई है। यही वजह है कि सीवीसी भी समय-समय पर प्रशासनिक अधिकारियों को अनुशासनात्मक प्रक्रिया तेजी से पूरी करने की जरुरत पर बल देता आ रहा है, लेकिन व्यावहारिक रुप से देखने में आता है कि इन विभागों में ऐसे मामलों को अंतिम रुप देने में अत्यधिक विलंब होता ही है। बरसों तक ऐसे मामले दबे पड़े रहते हैं। शिकायतकर्ता के लिए मुश्किलें बढ़ जाती है जबकि कर्मचारियों को गलत होने के बावजूद कोई तकलीफ नहीं होती। यही कारण है कि सरकारी कर्मचारी आमजन की शिकायतों को लेकर इतने उदासीन रहते है कि अपने व्यवहार और विचार में सुधार का प्रयास करना भी जरुरी नहीं समझते। नतीजन आमजन को बेहतर सेवा या सूचना मिल ही नहीं पाती। इन्हीं बातों को देखते हुए सीवीसी की ओर से सभी विभागों को जारी निर्देश में भी कहा गया था कि बार-बार कहे जाने के बावजूद यह देखा गया है कि ऐसे लंबित मामलों के प्रति संबंधित अनुशासनात्मक अधिकारी जरुरी ध्यान नहीं दे रहे हैं।

हालांकि, भ्रष्टाचार का यह मकड़जाल हर जगह फैला हुआ है पर सरकारी विभागों में स्थिति वाकई अफसोसजनक है, जबकि अधिकतर सरकारी विभाग उन बुनियादी सेवाओं से जुड़े हैं जो आम नागरिकों के लिए सुरक्षित और सम्माननीय जीवन जीने के लिए आवश्यक है। घूसखोरी के इस दलदल की यह स्थिति सरकारी तंत्र में हर स्तर पर बनी हुई है, जिससे अन्ततः आमजन को ही जूझना पड़ता है। शायद यही वजह है कि आम आदमी इन सरकारी विभागों में अपना काम करवाने के लिए कभी-कभी खुद भी भ्रष्टाचार को पोषित करने वाला कदम उठा लेते हैं। शिकायतों पर कार्यवाही होने के अनिश्चितकालीन समय के चलते शिक्षित और सजग रवैया ही अपनाते हैं। आमजन की मजबूरी, भ्रष्टाचार के मकड़जाल को विस्तार पाने का मौका दे रही है। फलतः वैश्विक स्तर पर भी भ्रष्टाचार को लेकर भारत की नकारात्मक छबि बनी हुई है।

भारत में सरकारी महकमों की कार्यशैली में पारदर्शिता हमेशा से ही एक बड़ी चुनौती रही है। भ्रष्टाचार की शिकायतों के लंबित मामलों को लेकर सही समय पर उचित कार्रवाई न हो पाना भी इसी रीति-नीति का हिस्सा है। यह सुस्त रवैया आमजन का मनोबल तोड़ने वाला और हमारी व्यवस्था पर प्रश्नचिन्ह लगाने वाला भी है, इसीलिए सरकारी कर्मचारियों से जुड़ी भ्रष्टाचार की किसी भी शिकायत के त्वरित निपटारे के लिए सोचा जाना जरुरी है। ऐसे में भ्रष्टाचार से जुड़ मामलों की जांच के लिए समय-सीमा निर्धारित करना एक सार्थक कदम है। ●

क्षिप्रमक्रियमाणस्य कालः पिबति तद्रसम्॥

अर्थात् समय पर नहीं किया गया कार्य उचित परिणाम कभी नहीं दे पाता।

भारत में इतने गद्दार क्यों ?

ज्वलन्त प्रश्न

ले. (सेवानिवृत्त)
मेजर जनरल मृणाल सुमन
(ए.वी.एस.एम., वी.एस.एम.)

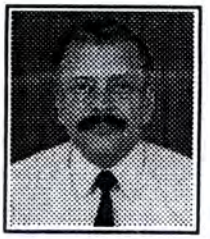

स्कूल में भारतीय इतिहास पढ़ाते समय हमसे बारम्बार कहा जाता था कि विदेशी आक्रान्ताओं ने भारतीयों में फूट डालकर भारत पर प्रभुत्व स्थापित किया। उनका चित्रण कुटिल षड़यन्त्रकारियों के रुप में किया जाता था। जो सरल, विश्वासपूर्ण भोले-भाले भारतीयों का शोषण करते थे। बहुत बाद में हमें इस मान्यता के खोखलेपन की अनुभूति होती थी। सच तो यह है कि हम ऐसे गद्दारों के दलों को उत्पन्न करने में कुशल हैं जो भारत के विनाश पर उल्लासित होते हैं। विदेशी आक्रान्ताओं की हर विजय उनके स्थानीय सहायकों के सहयोग द्वारा सम्भव हुई, जिन्होंने स्थानीय राजाओं से बदला लेने के लिए या कुटिल लाभ के लिए उनसे विश्वासघात किया। कोई भी दुर्ग किसी विश्वासपात्र मन्त्री या सेनापति की गद्दारी के बिना विजित नहीं हुआ।

दुर्भाग्यवश सदियों की गुलामी से हमने कुछ नहीं सीखा। आज भी हम झूंड के झूंड ऐसे व्यक्तियों को जन्म दे रहे हैं जो अपने तुच्छ व्यक्तिगत लाभ के लिए किसी भी हद तक झुक सकते हैं, यहां तक कि राष्ट्रीय सुरक्षा को भी संकट में डाल सकते हैं। हमारे नेताओं, मीडिया और बुद्धिजीवियों का एकमात्र एजेन्डा यही प्रतीत होता है कि किस प्रकार ऐसे-ऐसे मुद्दा उठाये जायें जो राष्ट्र को विभाजित करें और छोटी-छोटी बातों को लेकर झगड़ने की प्रवृत्ति को तथा आन्तरिक विरोध को उकसायें और इस प्रकार प्रगति बाधक बनकर देश को बदनाम करें। वे भारत के विकास से घृणा करते हैं। मैं स्पष्ट करता हूं -

हमारे ये नेता ही सारी अलगाववादी प्रवृत्तियों के स्त्रोत हैं। उनके लिए वोट की राजनीति सबसे प्रमुख है। वोट पाने की आशा से बांग्लादेश से गैरकानूनी ढंग से भारत आने वाले बांग्लादेशियों की सहायता करने में कितना खतरा है यह समझने के लिए किसी दिव्यदृष्टि की आवश्यकता नहीं है। किन्तु बेईमान राजनीतिज्ञ बेफिकरी से ऐसा कर रहे हैं। शर्म से सिर झुक जाता है जब राजनीतिक नेता एक ऐसे अपराधी छात्र नेता की सहायता करते हैं जो भारत का विनाश करना चाहता है।

शहीद भगतसिंह से उनकी तुलना से बढ़कर विश्वासघात और क्या हो सकता है। शायद भारत ही एकमात्र ऐसा देश है जिसने ऐसे बदनाम गृहमन्त्री बनायें है जो देश के अपमान में गौरव का अनुभव करते हैं। एक ने तो अपने दल की नेता को प्रसन्न करने के लिए भगवा आतंकवाद का झूठा सिद्धांत गढ़ा। ऐसा करके उन्होंने पाकिस्तान को झूठे प्रचार के लिये एक हथियार दे दिया। एक अन्य गृहमन्त्री ने एक अकल्पनीय कार्य किया और एक आतंकवादी के निर्दोष होने का झूठा हलफनामा दे दिया। उनका उद्देश्य विपक्ष के नेताओं को एक झूठे मुकदमें में फंसाना था। इस प्रक्रिया में भारत के गुप्तचर विभाग को अत्यधिक क्षति पहुंची।

जब एक नेता घोषित करता है, **"आज देश में एक गाय होना, एक मुसलमान होने से अधिक सुरक्षित है।"** तब वह सारे देश को लज्जित करता है। संसार का मीडिया इस प्रकार की खबरों को बहुत धूर्ततापूर्ण प्रसन्नता से घोषित करता है। भारत की छवि पर भीषण आघात होता है तथा सरकार के विरुद्ध छोटी-मोटी जीत के लिए वह विरोधी शक्तियों को दुष्प्रचार का एक मौका दे देता है। **हाल ही में एक प्रसिद्ध एडवोकेट और पूर्व कानून मंत्री ने एक टी.वी. चैनल पर कहा कि देश के विनाश के नारे लगाना संविधान में निषिद्ध नहीं है। उनके अनुसार**

अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता का सर्वाधिक महत्व है, यहां तक कि देश से पृथक होने की मांग भी न्यायोचित है। जैसे-जैसे साक्षात्कार आगे बढ़ता गया श्रोता उनके विकृत तर्कों से न केवल स्तम्भित हुये वरन् उस सीनाजोरी से, जिससे वे तर्क कर रहे थे, स्तब्ध हो गये। भारत के अस्तित्व के लिए उन्हें कोई चिन्ता नहीं थी। सुनने वाले को आश्चर्य होता था कि वह किसी भारतीय चैनल को सुन रहा है या पाकिस्तानी चैनल को।

द्वितीय : हमारे मीडिया वाले :- उनके विषय में जितना कम कहा जाये उतना अच्छा है। उनके व्यवहार से लगता है कि उनमें से बहुत से विदेशी हैं और भारत उनके लिए कुछ मायने नहीं रखता। एक शीर्षस्थ मीडिया संगठन ने जनरल परवेज मुशर्रफ सदृश भारत-विद्वेषी और पाश्चाताप रहित शत्रु को बुलाया और उनके सामने नत हुए। यह इस बात का प्रमाण था कि पत्रकारिता निर्लज्जता की किस सीमा तक डूब सकती है। कारगिल युद्ध के लिए लांछित करने के स्थान पर उसके साथ एक शान्तिप्रेमी अतिथि के समान व्यवहार किया गया।

हमारा समाचार तन्त्र-चाहे इलैक्ट्रानिक हो या मुद्रित कभी भी देश के विषय में किसी सकारात्मक या उत्साहवर्धक समाचार को प्रकाशित नहीं करता। कुरुप भारत (जैसे स्लमडॉग मिलयोनेयर) बिकता है, और प्रगतिशील भारत नहीं। याद करिये कि एक टी.वी. संवाददाता ने, जो अमरीका में मोदी की लोकप्रियता नहीं सह सका, जन समूह को उत्तेजक प्रश्नों द्वारा उकसाने का प्रयत्न किया। क्योंकि उन्हें भारत का अवमूल्यन करने के लिए धन मिलता है, उसकी प्रशंसा के लिये नहीं। मीडिया के द्वारा अपनी षड़यन्त्रकारी (मेकाविलीयन) नीति एवं खबरों को विकृत प्रस्तुति के माध्यम से देश की एकता की अपरीमित हानि की जा रही है। हर समाचार को एक धार्मिक या जातिवादी या सिद्धान्तवादी मोड़ देकर प्रस्तुत किया जाता है, जैसे "एक दलित लड़की के साथ दिल्ली की बस में छेड़छाड़।" (जैसे दिल्ली की बसों में अन्य महिलाओं के साथ छेड़छाड़ नहीं होती) या "चर्च के चौकीदार की हत्या।" (वास्तव में दो सुरक्षाकर्मियों का विवाद हिंसक हो गया था।) या "मुस्लिम ड्राइवर द्वारा एक लड़का कुचला गया।" (जैसे इस घटना में मुसलमान होने की कोई संगतता है।) हाल ही में पशुओं की चोरी के एक मामले में, एक प्रमुख समाचार पत्र ने यह अवश्य जोड़ दिया, "पांच चोरों में से एक अतीत में एक गौरक्षा दल से जुड़ा था।" किस प्रकार कुटिलता से चोरी के एक मामले को एक धार्मिक मोड़ दे दिया गया। क्षुद्र तोड़फोड़ करने वाले व्यक्ति को जननेताओं के समान प्रचार क्षेत्र दिया जाता है। कितना कुत्सित था दो टी.वी. चैनलों द्वारा एक छात्र नेता के साक्षात्कार दिखाना, जिस पर देशद्रोह के आरोप हैं। सबसे खराब था टी.वी. प्रसारकों द्वारा उसके प्रति पक्षपातपूर्ण रवैया, मानों किसी राष्ट्रीय हीरों का यशोगान किया जा रहा है। और ये साक्षात्कार मुख्य समयों पर प्रसारित किये गये। क्या इन टी.वी.चैनलों ने कभी युद्धवीरों या शहीदों के परिवारों से साक्षात्कार करने का विचार किया ? यह सम्भावना भूल जाइये ! क्योंकि ऐसा करना भारत के पक्ष में किया गया कार्य होता और भारत-समर्थक कोई भी कार्य इन मीडिया वालों के लिए भ्रष्ट है।

तृतीय - स्वघोषित धर्म निरपेक्ष बुद्धिजीवी वर्ग :- इस वर्ग ने भारत के सम्मान और प्रतिष्ठा को सर्वाधिक हानि पहुंचाई है। उनमें से कुछ तो देशद्रोही प्रतीत होते हैं जो प्रगतिवादी बुद्धिजीवियों का छद्मवेश धारे हैं। संसार के किस देश के बुद्धिजीवी अमरीकी सरकार को लिखेंगे कि उनके प्रधानमंत्री से भेंट न करें ? ईमानदारी से देखा जाये तो निर्लज्ज, विदेश में शिक्षित और विदेशों से धन पाने वाले विरोधी तत्वों द्वारा १२५ करोड़ भारतीयों के निर्वाचित प्रतिनिधि का यह अपमान असह्य है। दुर्भाग्यवश उनके द्वारा किये गये विरोधों का विदेशों बहुत प्रचार-प्रसार होता है और इससे विश्वमंच पर भारत की छवि को ऊंचा उठाने के समस्त प्रयत्न असफल होते हैं।

यह निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि बड़े कौशल से संचालित इस असहनीयता अभियान का लक्ष्य पूरी तरह दुर्भावनापूर्ण था। जैसी कि आशा थी जब सच्चे तथ्य सामने आये, हमारे बिके हुये मीडिया ने उनको अनदेखा कर दिया। सैकड़ों ईसाईयों ने अपने चर्चों के नेताओं के

नेतृत्व में दिल्ली की सड़कों पर चर्चों में तथाकथित तोड़फोड़ और एक ईसाई स्कूल में चोरी के विरोध में जुलूस निकाला। सामान्य छोटे-मोटे अपराधों को अल्पसंख्यक विरोधी गतिविधियों के रुप में प्रदर्शित किया गया। उन्होंने अपने विरोधों का भारतीय और विदेशी मीडिया द्वारा व्यापक प्रचार-प्रसार कराया और इस प्रकार भारत की धर्मनिरपेक्ष छवि को बहुत क्षति पहुंचाई। विदेशी चैनलें तो भारत को शर्मिन्दा करने के लिए सदैव उत्सुक रहती है। यहां तक कि ओबामा भी इससे प्रभावित हुए और भारत को अनावश्यक सलाह देकर, भारतीयों की सद्भावना को दी। कहा जाता है कि उन्होंने एक भारतीय नेता के उकसाने पर ऐसा किया था।

सैनिक और राष्ट्रीय प्रतीक :- **राष्ट्र का झण्डा, राष्ट्रगान और राष्ट्रीय अभिवादन, एक देश की राष्ट्रीय पहचान और गौरव होते हैं।** वे हमारी प्राचीन विरासत, वर्तमान चुनौतियों और भावी अभीप्साओं के प्रतीक हैं। सैनिक के लिए उनकी पवित्रता निर्विवाद है। भारत के हजारों सैनिकों ने दुश्मन के मोर्चों पर तिरंगा फहराने के लिए अपने प्राण देकर उस सर्वोच्च सम्मान को प्राप्त किया है जब उनके शव तिरंगे में लपेटकर लाये गए।

राष्ट्रगान के स्वर सुनकर हर सैनिक को रोमांच हो जाता है और उसके प्रभाव से उनके अन्दर एक बिजली सी दौड़ जाती है, उनका प्रत्युत्तर तात्कालिक होता है। जब स्वतन्त्रता दिवस या गणतन्त्र दिवस के समारोहों में टी.वी. पर राष्ट्रगान बजता है तब सैनिक अपने घरों में भी सम्मान में सपरिवार खड़े हो जाते हैं।

इस प्रकार राष्ट्रीय उद्घोषों **'हिन्दुस्तान जिन्दाबाद'**, 'जय हिन्द', 'भारत माता की जय' के नारे सुनकर उनकी नसों में जोश लहरें मारने लगता है। ये उद्घोष सैनिकों को चरम बलिदान करने के लिए प्रेरित करते हैं। सभी सैनिक समारोहों में उच्चतम स्वर में **'भारत माता की जय'** का उद्घोष होता है। अतः राष्ट्रीय उद्घोषों को लेकर चल रहे वाद-विवाद सैनिकों के लिए बहुत कष्टप्रद है। वे यह नहीं समझ पाते कि राष्ट्र के सम्मान घोषों से किसी भारतीय को क्या आपत्ति हो सकती है ? **'भारत माता की जय'** को कैसे धार्मिक रंग दे दिया ?

अन्ततः इतिहास इस बात का गवाह है कि जिस देश में विश्वासघात, धोखे और कपट का कीड़ा लग जाता है, वह आसानी से विदेशियों के अधीन हो जाता है। इस कड़वे सच को भारत से अधिक कौन जनि सकता है। किन्तु हमारे नेता, मीडिया और बुद्धिजीवी अपने देशद्रोहपूर्ण शब्दों द्वारा देश की अवमानना करते हैं और उसे हानि पहुंचाते हैं। बोलने की स्वतन्त्रता की आड़ में वे इन महाकपटी भाषणकर्त्ताओं का समर्थन करते हैं जो जब तक सारा देश नष्ट न हो जाये, तब तक विश्राम न करने की कसम खाते हैं। जब पेरिस पर आतंकवादियों ने आक्रमण किया, पूरे फ्रांस ने एकस्वर होकर उन्हें उत्तर दिया। जरा इसकी तुलना बटाला हाउस में इंडियन मुजाहिद्दीन से हुई मुठभेड़ से कीजिये, जिसमें दो आतंकवादी मारे गये और दो बन्दी हुए। एक बहादुर पुलिस अफसर भी मारा गया। किन्तु बहुत से देशद्रोहियों ने बदतमीजों से इस मुकाबले को **'फरजी बताया'**। अतः यह रहस्यमय अनसुलझा ही रह गया। **आखिर भारत लगातार इतने जयचन्द और मीरजाफरों को जन्म क्यों देता है ? क्या भारत एक अभिशप्त देश है? या देशद्रोह हमारे डी.एन.ए. का एक अंश है ? आश्चर्य होता है।** ***सौजन्य - प्रभात आश्रम मेरठ***

गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय शुक्रताल, मुजफ्फरनगर उ.प्र. में प्रवेश प्रारंभ

गुरुकुल महाविद्यालय गंगा के पावन तट पर ऋषि महर्षियों की तपस्थली, प्रकृति के सुरम्य वातावरण में स्थित है। यहां संस्कृत भाषा के साथ-साथ आधुनिक विषयों जैसे अंग्रेजी, गणित, इतिहास, भूगोल एवं अर्थशास्त्र आदि विषयों का अध्यापन सुयोग्य अध्यापकों के द्वारा कराया जाता है। कम्प्यूटर शिक्षा का उत्तम ज्ञान कराया जाता है। संस्था में प्रवेश के लिए ५वीं कक्षा उत्तीर्ण होना अनिवार्य है। कृपया अपने होनहार बच्चों को संस्कार युक्त शिक्षा दिलाने हेतु सम्पर्क करें। **स्वामी आनन्दवेश बलदेव नैष्ठिक (९९९७४३७९९०), प्रेमशंकर मिश्र प्रधानाचार्य (९४११४८१६२४, ९९९७०४७६८०)**

दयानन्द गाथा

गुरु विरजानन्द से शिक्षा, सत्यार्थ प्रकाश का लेखन और आर्य समाज की स्थापना ऋषि दयानन्द जीवन के प्रमुख महान कार्य

- मनमोहन कुमार आर्य

ऋषि दयानन्द के जीवन एवं कार्यों का देश व विश्व में समुचित व यथार्थ मूल्यांकन नहीं हुआ है। इसका प्रमुख कारण लोगों की सत्य जानने के प्रति उपेक्षा, स्व–स्व मत– मतान्तरों के प्रति अनुचित आदर भाव और भौतिक सुखों की प्राप्ति आदि प्रमुख कारण प्रतीत होते हैं। यदि देश व विश्व के लोगों में सत्य के जानने की तीव्र लालसा व इच्छा शक्ति होती और स्व–स्व मतों का आग्रह न होता, वह सत्य के ग्रहण और सत्य के त्याग की भावना से युक्त होते तो आज संसार में ऋषि दयानन्द को संसार में अब तक हुए महापुरुषों में सबसे श्रेष्ठ व ज्येष्ठ स्थान दिया जाता। हमारा सौभाग्य है कि एक पौराणिक और अल्पशिक्षित व अशिक्षित परिवार में जन्म लेकर भी हम आर्यसमाज से जुड़ सके और ऋषि दयानन्द के जीवन व साहित्य के द्वारा हम इस संसार और मनुष्य जीवन को उसके यथार्थ सत्य स्वरूप नें जान सके।

आज हमने इन विषयों की एक आर्यमित्र से भी चर्चा की और दोनों में ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज विषयक जो चर्चायें हुई उसमें यही निष्कर्ष सामने आया कि हम आर्यसमाज के अनुयायी अन्य मत–मतान्तरों एवं नास्तिकों की तुलना में कहीं ज्यादा भाग्यशाली हैं कि जिन्हें ईश्वर, जीव व प्रकृति सहित संसार और ईश्वर प्राप्ति के साधनों एवं साथ ही यज्ञ, योग, परोपकार, शाकाहारी जीवन, प्राणियों पर दया व उनकी रक्षा आदि का तथ्योक्त ज्ञान है। हमने यह भी अनुभव किया कि हमारी जो वर्तमान स्थिति है, वह ऐसी कदापि न होती यदि हम ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज से न जुड़ते।

ऋषि दयानन्द का यह महत्व किस कारण से है? इस पर विचार करें तो इसका कारण ऋषि दयानन्द को इस सर्ष्टि के सभी विषयों का सत्य ज्ञान, देश व समाज के हित में उनका प्रचार व उनकी विश्व के कल्याण की भावना थी। महाभारत काल के बाद और ऋषि दयानन्द से पूर्व अनेक महापुरुष हुए, वह विद्वान भी पर्याप्त थे और उन्होंने प्रचार भी किया परन्तु वह ईश्वर, जीवात्मा तथा संसार विषयक उस ज्ञान को प्राप्त नहीं हो सके जो ऋषि दयानन्द ने प्राप्त किया था व उसका देश देशान्तर में प्रचार किया।

ऋषि दयानन्द को यह ज्ञान अपने योग व ब्रह्मचर्य के बल सहित गुरु विरजानन्द सरस्वती की शिक्षा व वेदों के अध्ययन, अनुसंधान व सत्य अर्थों से प्राप्त हुआ जो महाभारत काल के कुछ काल बाद हुए ऋषि जैमिनी के अतिरिक्त किसी अन्य विद्वान को प्राप्त नहीं हुआ था। ऋषि जैमिनी जी ने भी मीमांसा दर्शन का प्रणयन तो किया परन्तु उन्हें वेदों के प्रचार प्रसार का वह कार्य नहीं किया, तब सम्भवतः इसकी आवश्यकता नहीं थी, जो ऋषि दयानन्द ने किया जिसके कारण आज हमारे पास वेद, उपनिषद, दर्शन, मनुस्मर्ति, रामायण व महाभारत आदि अनेक ग्रन्थों के हिन्दी में सत्यार्थ भी उपलब्ध है।

ऋषि दयानन्द जिस काल में उत्पन्न हुए वह घोर अविद्या का काल होने के साथ उन दिनों हमारा देश अंग्रेजों के पराधीन था। इससे पूर्व भी देश मुस्लिम शासकों का परतन्त्र रहा जिनके काल में भारत को अपना सर्वस्व नष्ट करना पड़ा। धन्य हैं हमारे वह पूर्वज जिन्होंने बाबर और औरंगजेब आदि

क्रूर शासकों के काल में भी अपने धर्म और संस्कृति को सुरक्षित रखा। ऋषि दयानन्द ने शिवरात्रि के व्रत, अपनी बहिन व चाचा की मृत्यु के कारण उत्पन्न वैराग्य से प्रभावित होकर अपने माता–पिता व घर छोड़कर ईश्वर व सत्य विद्याओं का अनुसंधान व खोज की। उन्होंने लगभग 16 वर्ष इस कार्य में लगाये। उन्होंने ईश्वर व जीवात्मा के सच्चे स्वरूप को जानकर गुरु विरजानन्द, मथुरा के परामर्श वा आज्ञा सहित अपनी निज इच्छा से भी संसार से अविद्या का नाश कर वेदों के रूप में सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर प्रदत्त ज्ञान का जन–जन में प्रचार का अभियान व आन्दोलन आरम्भ किया। सत्य के प्रचार के लिए उन्होंने मिथ्या विश्वासों मूर्तिपूजा, अवतारवाद, जन्मा जाति व्यवस्था, फलित ज्योतिष, मृतक श्राद्ध, मत–मतान्तरों की अविद्यायुक्त मान्यताओं का खण्डन किया व विरोधियों से शास्त्रार्थ किये।

इसका परिणाम यह हुआ कि देश व विश्व में वैचारिक क्रान्ति का जन्म हुआ और सभी मत–मतान्तरों को अपनी अपनी कमियों व खामियों का ज्ञान भी हुआ अन्यथा वह शास्त्रार्थ की चुनौती स्वीकार कर ऋषि दयानन्द की चुनौतियों का उत्तर देते। उत्तर नहीं दिया व न दे सके, यह इस बात को बताने के लिए पर्याप्त है कि उनके पास ऋषि दयानन्द द्वारा मत–मतान्तरों से पूछे गये प्रश्नों व आक्षेपों के उत्तर थे ही नहीं। आश्चर्य है कि आज भी वह सभी व उसके बाद भी उत्पन्न मत–मतान्तर पहले से भी अधिक अन्धविश्वासों के साथ समाज में प्रतिष्ठित हैं व फल–फूल रहे हैं।

ऋषि दयानन्द का पहला प्रमुख कार्य तो उनका गुरु विरजानन्द जी से आर्ष शिक्षा को प्राप्त करना था जिससे वह वेदों के यथार्थ स्वरूप सहित वेद मन्त्रों के यथार्थ अर्थ जान सके। यदि यह न हुआ होता तो फिर ऋषि दयानन्द, दयानन्द व स्वामी दयानन्द ही रहते जैसे कि आज अनेकानेक साधु संन्यासी व विद्वान हैं। कोई उनको जानता भी न। गुरु विरजानन्द जी की शिक्षा ने उन्हें संसार के सभी विद्वानों से अलग किया जिसका कारण उनकी प्रत्येक मान्यता का आधार वेद सहित सत्य व तर्क पर आधारित होने के साथ उनका सर्वसृष्टि क्रम के अनुकूल होना भी है। ऋषि दयानन्द के जीवन का दूसरा प्रमुख कार्य हमें उनके द्वारा सत्य के रहस्यों का उद्घाटन करने वाला विश्व प्रसिद्ध, विश्व साहित्य में अनुपमेय, न भूतो न भविष्यति प्रकार के ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' का प्रणयन है। सत्यार्थप्रकाश ने हमें सत्य व असत्य की पहचान बताई। मत–मतान्तरों में क्या असत्य है और क्या सत्य, यह भी सत्यार्थप्रकाश के अध्ययन से ही ज्ञात हो सकता है व हुआ है। सत्यार्थप्रकाश से ईश्वर, जीवात्मा व सृष्टि के मूल स्वरूप के ज्ञान सहित मूल प्रकृति की विकृति इस संसार का यथार्थ ज्ञान भी होता है। समाज व्यवस्था कैसी हो, इसकी चर्चा करते हुए ऋषि दयानन्द मनुष्य के परिवेश व जन्म की महत्ता को महत्व न देते हुए मनुष्य के गुण, कर्म, स्वभाव, उसके चरित्र व कार्यों तथा उसकी सुशीलता आदि गुणों को महत्व देते हैं और सबके लिए वेदों पर आधारित पक्षपात से रहित समान शिक्षा व अध्ययन को महत्व व प्राथमिकता देते हैं।

स्वामी जी संस्कृत और आर्यभाषा हिन्दी को अंग्रेजी से अधिक महत्व देते हैं जो कि उचित ही है। गोरक्षा का महत्व बताते हैं। उससे होने वाले आर्थिक व स्वास्थ्य विषयक लाभों की चर्चा करते हैं और गोहत्या व गोमांसाहार को पाप व अमानवीय बताकर उसका निषेध करते हैं। स्वामी जी विचारों की स्वतन्त्रता के पक्षधर थे परन्तु आजकल की तरह देश विरोधी बातें करने को वैचारिक स्वतन्त्रता न मानकर इसे दण्डनीय अपराध मानते थे, ऐसा उनके साहित्य को पढ़कर विदित होता है। सत्यार्थप्रकाश को पढ़कर हिन्दू व आर्य वैदिक धर्म की श्रेष्ठता से परिचित हो जाते हैं और वह ईसाई व मुसलमानों के धर्मान्तरण व इस प्रकार की गतिविधियों में फंसने से बच जाते हैं। इसके विपरीत आर्यसमाज के विद्वान वेदों व वैदिक धर्म की सच्चाई व श्रेष्ठता का प्रचार कर दूसरे मतों के निष्पक्ष लोगों को वैदिक धर्म के सिद्धान्तों को

स्वीकार करने में भी सफल हो जाते हैं। यही कारण है कि आज किसी मत के विद्वान में वैदिक मान्यताओं पर आक्षेप करने का न साहस है और न योग्यता। वह जो करते हैं वह सब परदे के पीछे छुप कर करते हैं। सत्यार्थप्रकाश के स्वाध्याय व अध्ययन से मनुष्य सच्चा मनुष्य जीवन जीने का लाभ प्राप्त करता है और ईश्वर, जीवात्मा सहित संसार को जानकर ईश्वर प्राप्ति के लक्ष्य व उसके साधनों को भी जानकर ईश्वर को सन्ध्या, यज्ञ, वेद व सत्यार्थप्रकाश आदि का स्वाध्याय करके प्राप्त कर लेता है। वह मांसाहार, नशा, अंडे, मछली, तले व फास्ट फूड आदि तामसिक पदार्थों के सेवन से बचता है और औरों की तुलना में स्वस्थ व अल्प व्यय में सुख व शान्ति का जीवन व्यतीत करता है। ऐसी बहुत सी बातें हैं जिनका उल्लेख किया जा सकता है। पाठक स्वयं सत्यार्थप्रकाश का पाठ कर इन बातों की सत्यता की परीक्षा कर सकते हैं।

ऋषि दयानन्द के जीवन का तीसरा महत्वपूर्ण कार्य आर्यसमाज की स्थापना है। ऋषि दयानन्द ने 10 अप्रैल, सन् 1875 को मुम्बई के गिरिगांव मोहल्ले के काकड़वाडी में प्रथम आर्यसमाज की स्थापना की थी। आर्य समाज के उद्देश्य, नियम व सिद्धान्त संसार में अद्वितीय व सर्वश्रेष्ठ हैं। यदि आर्यसमाज स्थापित न हुआ होता तो वैदिक धर्मियों का संगठन न बनता। आर्यसमाज की स्थापना से आज तक विद्वानों ने संगठित होकर जो कार्य किये हैं, वह भी न होते और हमें आर्यसमाज से जुड़ने के कारण जो अकथनीय लाभ हुए हैं, वह हमें व हमारे दूसरे बन्धुओं को भी न होते। आर्यसमाज की स्थापना हो जाने पर ऋषि दयानन्द जी के अनुयायियों ने स्वामी जी को साधन उपलब्ध कराये।

वह देश भर में प्रचारार्थ घूमें और इसके साथ ही समय समय पर पंचमहायज्ञविधि, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका सहित वेदभाष्य, संस्कार विधि, आर्याभिविनय, गोकरूणाविधि, व्यवहारभानु, आत्माकथा आदि का लोखन व परोपकारिणी सभा की स्थापना आदि कार्य किये, यह कार्य भी आर्यसमाज की स्थापना के परिणाम से हुए। ऋषि दयानन्द की मृत्यु के बाद विद्वानों ने आर्यसमाज के अन्तर्गत संगठित होकर वेदभाष्य व अनेकानेक ग्रन्थ लेखन सहित वेद प्रचार का जो महनीय कार्य किया वह भी न होता। अतः आर्यसमाज की स्थापना ऋषि दयानन्द का एक महत्वपूर्ण कार्य है जो इस सृष्टि के अन्तिम समय अर्थात् प्रलय तक अपने अस्तित्व को सुरक्षित रखते हुए असत्य का खण्डन और सत्य का मण्डन व प्रचार करता रहेगा। इसी में संसार, प्रत्येक मनुष्य व प्राणीमात्र का हित व कल्याण जुड़ा हुआ है। देश की आजादी का सम्पूर्ण व अधिकांश श्रेय भी ऋषि दयानन्द व आर्यसमाज के सत्य के प्रचार को ही जाता है। परतन्त्रता के काल में आर्यसमाज ने ही देश में डीएवी स्कूल व कालेजों सहित गुरुकुल खोलकर शिक्षा जगत में क्रान्ति की थी। आर्यसमाज ने ही देश को स्वामी श्रद्धानन्द, श्यामजी कृष्ण वर्मा, महात्मा हंसराज, लाला लाजपतराय, रामप्रसाद बिस्मिल, भाई परमानन्द, महादेव गोविन्द रानाडे, शहीद भगतसिंह सहित अनेक देशभक्त, धर्म व संस्कृति के शीर्ष विद्वान व योद्धा दिये। आर्यसमाज की स्थापना का ही सुपरिणाम है कि आज देश स्वतन्त्र है। ऋषि दयानन्द की बातों को पूरा पूरा न मानने के कारण ही आज देश में अनेक गम्भीर समस्यायें हैं। यदि ऋषि दयानन्द जी की सभी बातों को देशवासियों ने मान लिया होता तो आज देश की मुख्य समस्यायें न होती। वेदों के ज्ञान से शून्य पठित लोग जब देश संबंधी राजनैतिक दृष्टि से निर्णय करते हैं तो उसमें अनेक खामियां होती है और वह गलत भी हो जाते हैं। आवश्यकता वेदों के ज्ञान के प्रचार व वैदिक जीवन व्यतीत करने की है जिससे हम अच्छे नागरिक बनकर देश को सशक्त व मजबूत कर सकें और देश के सभी आन्तरिक व बाह्य शत्रुओं पर विजय पा सकें। इसके लिए देशवासियों में दृण इच्छा शक्ति का होना आवश्यक है जो सत्य व न्याय पर आधारित हो। इसी के साथ इस लेख को विराम देते हैं।

पताः 196 चुक्खूवाला–2 देहरादून–248001

नैत्यिक

स्वर्ग कामो यजेत

- नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

स्वर्ग कामो यजेत् अर्थात् जिसको स्वर्ग की कामना हो वह यज्ञ करे। इस मंत्र में आदेश स्पष्ट है और हम सभी मनुष्यों को मिलकर एक साथ यज्ञ कर्म स्वर्ग अर्थात् सुख विशेष की कामना से करना चाहिए। यहां यज्ञ कर्म को स्वर्ग अर्थात सुख विशेष की प्राप्ति का साधन बताया गया। इसे पूरी तरह से समझने के लिए हमें यज्ञ और स्वर्ग दोनों शब्दों के विस्तृत यौगिक अर्थों को उनके सही स्वरुप और परिपेक्ष्य में समझना होगा। साथ ही इन दोनों शब्दों यज्ञ और स्वर्ग के बारे में फैली भ्रान्तियों को भी दूर करना होगा। तभी हम स्वर्ग कामो यजेत के आदेश को यथावत जानकर मानते हुए पालन कर पायेगे।

प्रथम यज्ञ को समझने का प्रयास करते हैं। यज्ञ को मनुष्य जीवन का सर्वश्रेष्ठ कर्म **यज्ञो वै श्रेष्ठतम् कर्म** बतलाया गया साथ ही **यज्ञो वै भुवनस्य नाभि** कहकर इस समस्त संसार का आधार माना गया। परमपिता परमेश्वर को भी यज्ञरुप प्रभो हमारे कहा गया। इनसे स्पष्ट है कि यज्ञ एक बहुत महान पुनीत श्रेष्ठतम् कर्म है। परन्तु प्रश्न वहीं रह जाता है कि आखिर इतना महान कार्य यज्ञ क्या है। क्या केवल अग्निहोत्र ही यज्ञ है या अग्निहोत्र उस जीवन यज्ञ का प्रारम्भ है। क्रान्तदर्शी देव दयानन्द ने आर्योद्देश्य रत्न माला में यज्ञ को परिभाषित करते हुए इसकी यौगिक परिभाषा बतलाई है - **"अग्निहोत्र से लेकर अश्वमेध पर्यन्त जो भी शिल्प व्यवहार वा पदार्थ विज्ञान है और जो दूसरों के उपकार के लिए किया जाता है उसे यज्ञ कहते हैं।"** इस परिभाषा पर चिंतन करें तो स्पष्ट होता है कि मनुष्य द्वारा जीवन में किया गया परोपकार का प्रत्येक कार्य यज्ञीय कार्यों की श्रेणी मे आता है। इस परिभाषा के प्रथम भाग पर चिंतन करें तो पाते है कि देव दयानन्द ने अग्निहोत्र से अश्वमेध पर्यन्त कह कर समस्त प्रकार के वैदिक कर्मकांडों को इसमें समाहित करके और जो भी शिल्प व्यवहार वा पदार्थ विज्ञान लिखकर सृष्टि में होने वाली प्रत्येक क्रिया प्रतिक्रिया को वैज्ञानिक आधार देते हुए शामिल किया और अन्त में इसे दिशा देते हुए लिखा जो दूसरों के उपकार के लिए हैं। इतनी बड़ी विस्तृत व्याख्या और यौगिक परिभाषा से स्पष्टहो जाता है कि परोपकार का प्रत्येक कार्य यज्ञीय कार्यों की श्रेणी में आता है। परोपकार का महत्व और इसकी पुष्टि करते हुए देव दयानन्द ने संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य लिखा है। ईश्वर को भी यज्ञरुप इसलिए कहा जाता है कि क्योंकि ईश्वर के सभी कार्यों सृष्टि के निर्माण पालन न्याय और संहार सभी में रहने वाले सभी प्राणियों के कल्याण और परोपकार की भावना ही निहित है और इसमें ईश्वर का स्वय का कोई स्वार्थ नहीं है।

इससे स्पष्ट हो जाता है कि अग्निहोत्र जिसे नित्य कर्म बताया गया एक प्रारम्भ है अन्त नहीं। यदि हम गाड़ी की टिकट तो आनलाईन बुक करवा ले परन्तु घर से स्टेशन समय पर जाकर गाड़ी पकड़ने का पुरुषार्थ ना करें तो अपने लक्ष्य का गंतव्य तक नहीं पहुंच पायेगै और इस प्रकार टिकट लेना भी व्यर्थ हो जाएगा। ठीक इसी प्रकार अग्निहोत्र दैनिक यज्ञ के उपरान्त इसे अपने जीवन के प्रत्येक कार्य में धारण करने का पुरुषार्थ करने से ही हम जीवन को यज्ञमय बना सकते हैं। संक्षेप में जिस प्रकार हवन कुंड में यज्ञ की अग्नि को स्थापित करते हैं ठीक उसी अपने आत्मा में सत्य ज्ञान की अग्नि को उद्बुद्ध करना होगा। जिस प्रकार हम दैनिक यज्ञ से पूर्व उस स्थान प्रत्येक सामग्री और अपनी स्वयं की शारीरिक सामाजिक और आत्मिक बल शुद्धता तय करते हैं। ठीक उसी प्रकार जीवन यज्ञ में हमें अपने समस्त कलुषित भावनाओं काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष आदि के पूर्वाग्रहों पर झाड़ू मार कर साफ करना होता है। जैसे अग्निहोत्र में हम प्रज्वलित यज्ञ की अग्नि में घृत सिंचित समिधा दान करते हैं ठीक इसी प्रकार जीवन यज्ञ में हमें खुद जीवन से समस्त बुराईयों स्वार्थ को दूर करके काष्ठ से समिधा

बनकर अपने सर्वस्व को अग्निस्वरुप परमपिता परमेश्वर को समर्पित करना होगा। जीवन यज्ञ करते हुए जब ईश्वर के प्रति पूर्णतया समर्पित हो जायेंगे तो समिधा की भांति अग्निस्वरुप हो जायेंगे। ऐसा होने पर हम ना केवल मां की गोद में खेल रहे बच्चे की भांति निर्भय हो जायेंगे अपितु संसार का कोई भी दुर्गुण दुर्व्यसन हमें परेशान नहीं कर पायेगा जैसे यज्ञ में आहूत अग्नि को समर्पित समिधा को कोई छू नहीं सकते वैसे जीवन यज्ञ में सत्य ज्ञान से प्रकाशित आत्मा में विराजमान सर्वअन्तयामी परमात्मा कष्ट व्यथा हमें छू भी नहीं पायेगी। इसके उपरांत जल प्रसेचन की प्रक्रिया हमें जीवन में जल से शान्ति और यज्ञाग्नि से क्रान्ति का संदेश देती है। हमारे जीवन में प्रत्येक क्रान्ति अर्थात् प्रगतिशीलता उर्ध्वगामी दिशा शान्तिपूर्वक यानि समन्वयता से होनी चाहिए। अग्निहोत्र में औषधियुक्त सामग्री की आहुतियाँ वेद मंत्रों सहित हमें संदेश देती है कि जीवन यज्ञ में हमारा प्रत्येक कार्य ईश्वरीय आज्ञा का यथावत पालन करते हुए परोपकार की दृष्टि से करेंगे तो निश्चित रुप से हम अपने जीवन को यज्ञमय बनाने में सफल हो जायेंगे।

हमारे जीवन के यज्ञमय बनते ही हमारा प्रत्येक कार्य सामाजिक सर्वहितकारी होने के कारण ईश्वरीय न्याय व्यवस्था में कर्मफल सिद्धान्त के अनरुप वांछित सुख विशेष अर्थात् स्वर्ग के सच्चे अधिकारी हो जायेंगे। यह स्वर्ग जीवन के उपरान्त मृत्यु के बाद किसी सातवें लोक की परिकल्पना नहीं होगी। अपितु मिलकर संगतिकरण से परोपकार के यज्ञीय कार्यों के संपादन से हमारा जीवन परिवार, समाज और राष्ट्र स्वर्ग बन जाएगा जिसमें सभी को वांछित सुख विशेष प्राप्त होंगे। क्योंकि स्वर्ग मृत्यु के उपरान्त किसी लोक की कल्पना नहीं है अपितु अपने परिवार समाज, राष्ट्र में सभी को सुख विशेष देकर इसे ही अपने जीवन में स्वर्ग बनाने की अवधारणा है इसलिए यह यज्ञ परोपकार के सामाजिक सर्वहितकारी कार्य हम सभी को एकसाथ मिलकर यज्ञ के अवयव संगतिकरण करते हुए करने चाहिए।

पता : ६०२, जी एच ५३, सैक्टर-२०, पंचकूला

सावन का गीत

हरी पत्तियाँ, हरी कोपलें, बेल हुई छतनार,
श्यामा बदली की छाया में, झूमे यह संसार।

झूमे तरुवर, पर्वत झूमें, झूमें है कचनार,
गुलमोहर संग नीम निगोड़ी, गाये राग मल्हार,
ता ता थैया सारंग नाचे, नाचे संग फुलवार॥
श्यामा बदली.....।
तरुनाई की स्वर्णिम आभा, भीगे अंग फुहार,
उड़ने की चाहत में उसको, लग गये पंख हजार,
यौवन की उमंग अभिलाषा, कामदेव झंकार॥
श्यामा बदली.....।
रुन-झुन रुन-झुन पायल बाजे, खेत हुए गुलजार,
हलधर के जयकारे के संग, खेत चले खेतिहार,
उत्सव है यह हरियाली का, शीतल हुई बयार॥
श्यामा बदली.....।

- आनन्द प्रकाश गुप्त, बिलासपुर

''सच्चा''

सच्चे हो
एक तो परिचय-पत्र दिखाओ
राशन कार्ड, वोटर कार्ड,
आई कार्ड, स्थाई जाति प्रमाण पत्र दिखाओ,
और है भी तो वे सब झूठे है
क्योंकि हम सच्चे हैं।
सच्चे का सब फर्जी है।
और झूठे का सब असली है।
उसका काम, नौकरी, व्यापार
पहचान-पत्र डिग्रियाँ
क्योंकि बहुत सारे झूठो ने
गवाही दी है उसके पक्ष में
कोर्ट तो सबूत मांगता है
सच्चे के पास न गवाह न सबूत
तो सच्चे को कारावास है सश्रम।

डॉ. देवेन्द्र कुमार मिश्रा, पाटनी कालोनी, भरत नगर, चन्दनगाँव, छिन्दवाड़ा (म.प्र.) ४८०००१

आध्यात्मिक

पाप हमसे दूर रहें !

- महात्मा चैतन्यमुनि

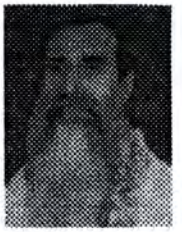

परमात्मा की उपासना से साधक के भीतर विवेक पैदा होता है और उस विवेक से पाप-वृत्ति का नाश हो जाता है। अविवेकी व्यक्ति ही अनेक प्रकार के पापकर्म करके उनके फल-रुपी दुःखों को भोगा करता है तथा जन्म-मरण के चक्कर में पड़ा रहता है। विवेक का हो जाना ही मुक्ति कहा गया है। अविवेकी व्यक्ति सदा दुःखी रहता है मगर विवेकी जीवन की प्रत्येक समस्य का समाधान निकालकर अपने जीवन को सुखी बना लेता है। इसीलिए हमारे शास्त्री में **'साधन चतुष्टय'** की बात कही गई है जिसमें सर्वप्रथम विवेक को ही रखा गया है। जीवात्मा अविवेक के कारण ही बन्धन में है इसलिए मुक्ति का कारण विवेक ही हो सकता है। सांख्यकार ने कहा है - **तत्राप्राप्तविवेकस्यानावृत्तिश्रुतिः** (१-४८) अर्थात् वेद चेतन चेतन में विवेक प्राप्त किए व्यक्ति का अपवर्ग बताता है। **ज्ञानान्मुक्ति** (३-२३) में भी यही बात कही गई है कि चेतन अचेतन के भेद साक्षात्कार से मोक्ष होता है। योग दर्शन के अनुसार - **तदा विवेकनिम्नं कैवल्यप्राग्भारं** चित्तम (४-२६), महर्षि दयानन्द जी इस सूत्र के बारे में लिखते है (ऋ.भा.भू.) जब सब दोषों से अलग होके ज्ञान की ओर आत्मा झुकता है, तब कैवल्य मोक्ष धर्म के संस्कार से चित्त परिपूर्ण हो जाता है, तभी जीव के मोक्ष प्राप्मत होता है। क्योंकि जब तक बन्धन के कामों में जीव फंसता जाता है, तब तक उसको मुक्ति प्राप्त होना असंभव है। विवेक की चर्चा करते हुए महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश के नवम समुल्लास में पांच कोषों, जीवात्मा की अवस्थाओं और विभिन्न शरीरों का विवेचन सूक्ष्मता से किया है। अनुभूति के आधार पर इनका सम्यक ज्ञान प्राप्त कर लेना ही विवेक है। अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय और आनन्दमय कोशों का विवेक प्राप्त करने के लिए साधक को दृढ़ता से प्रयास करना चाहिए।

इसी विवेक के अन्तर्गत ही महर्षि जी ने जीव की अवस्थाओं की चर्चा की है। ये अवस्थाएँ भी साधना के स्तर पर ही निर्भर करती है। पहली अवस्था है जागृत अवस्था। जब हम जाकते हुए इस स्थूल शरीर के क्रिया कलापों तक ही सीमित रहते है तब मानों हम जाग्रत अवस्था में होते हैं। इस समय मुख्य रुप से यह स्थूल शरीर ही सक्रिय रहता है। दूसरी अवस्था - स्वप्नावस्था। उस समय सूक्ष्म शरीर अधिक सक्रिय हो जाता है। जब हम नीन्द में स्वप्न आदि देखते हैं उस समय स्थूल शरीर तो सक्रिय नहीं होता अतः सूक्ष्म शरीर के आधार पर ही वह सारा कार्यकलाप हो रहा होता है। तीसरा अवस्था महर्षि जी ने सुषुप्ति अवस्था बताई है। यह अवस्था उस समय की है जब कारण शरीर ही में आत्मा विचरता है। यह स्वप्न रहित स्थिति ही मानों सुषुप्ति अवस्था है। इससे आगे तूरियावस्था है जो परमात्मा प्राप्ति की अवस्था है। महर्षि जी ने चार शरीरों की चर्चा करते हुए लिखा है कि एक-एक स्थूल हो यह दिखता है। दूसरा पाचं, प्राण, पांच ज्ञानेन्द्रियां, पांच सूक्ष्म भूत और मन तथा बुद्धि इन सत्तरह तत्वों का समुदाय 'सूक्ष्म' शरीर कहाता है। यह सूक्ष्म शरीर जन्म मरणादि में भी जीव के साथ रहता है इसके दो भेद हैं - एक भौतिक अर्थात जो सूक्ष्म भूतों के अंशों से बना है। दूसरा स्वाभाविक जो जीव के स्वाभाविक गुण रुप है। यह दूसरा अभौतिक शरीर मुक्ति में भी रहता है। इसी से जीव मुक्ति में सुख को भोगता है। तीसरा कारण जिसमें सुषुप्ति अर्थात गाढ़ निद्रा होती है वह प्रकृति रुप होने से सर्वत्र विभु और सब जीवों के लिए एक है। चौथा तुरिया शरीर वह कहाता है जिसमें समाधि से परमात्मा के आनन्दस्वरुप में जीव मग्न होते हैं।

यह विवेचन वास्तव में हमें शरीर, मन, प्राण, आत्मा आदि के सम्बन्ध में विस्तार से बताता है। केवल लिखने और पढ़ने भर तक यह विवेचन सीमित नहीं रहना चाहिए बल्कि साधक को उपासना के द्वारा इन-इन स्थितियों को सिद्ध करने की आवश्यकता है, तभी उसे वास्तव में विवेक हो सकेगा... और जो विवेकी हो गया उसके द्वारा

किसी प्रकार का पाप करने का तो प्रश्न ही पैदा नहीं होता है तथा पाप नहीं करेगा तो समस्त दुःखों से भी उसकी निवृत्ति हो जाएगी और जन्म-मरण के चक्कर से भी छूट जायेगा क्योंकि सूक्ष्म-शरीर पर पड़े हुए ये कुसंस्कार ही हमें अनेक योनियों से भटकाते रहते हैं। साधक प्रार्थना करता है -

परोऽपेहि मनस्पाप किमशस्तानि शंससि ।
परेहि न त्वा कामये, वृक्षान् वनानि संचार गृहेषु मे मनः॥

(अथर्व. ६-४५-१)

हे मानसिक पाप ! छूर हट जा, क्यो अप्रशस्त कामों की तू प्रशंसा-स्तुति करता है। दूर चला जा, तुझे मैं नहीं चाहता, वृक्षों और वनों में फिरता रह और मेरा मन-गृह-कृत्यों और गौ आदि पशुओं की सेवा में लगा रहे। मन्त्र में पाप को दूर ही रहने के लिए कहा गया है मगर यह दूर कैसे होगा ? प्रभु की उपासना से ही व्यक्ति पाप को दूर भगाने में सफल हो सकता है। इसलिए वेद में प्रार्थना की गई है -

देवकृतस्यैनसोवजयनमसि.....
..... सर्वस्यैनसोवयजनमसि ॥ (यजु. ८-१३)

हे अग्निस्वरुप परमात्मा ! आप देवों के प्रति किए हुए पापों को दूर करने वाले हैं। मनुष्यों के प्रति किए हुए पापों को दूर करने वाले है। पितृजनों के प्रति किए हुए पापों को दूर करने वाले हैं। अपने प्रति किए पापों से बचाने वाले है, सर्व पापों से बचाने वाले हैं और मैं जो जानते हुए या बिना जाने पाप करता हूँ उस समग्र पाप से आप बचाने वाले हैं। निश्चित रुप से परमात्मा हमारे पापों को दूर करने वाले हैं - **व्यार्त्या पवमानो वि शकः पापकृत्यया ।**
व्यहं सर्वेण पाप्पना वि यक्ष्मेण समायुषा ॥

(अथर्व. ३-३१-२)

मन्त्र में परमात्मा को पवमान तथा शक से सम्बोधित किया गया है अर्थात् वह पवित्र करने वाला तथा शक्तिशाली परमात्मा हमें पापकर्म से अलग करने वाला है। उसकी उपासना करके व्यक्ति समस्त पापों तथा क्षयरोगादि से दूर रहकर पूर्ण आयु को प्राप्त होता है।

यथा वातश्च्यावयति भूम्या रेणुन्तरिक्षाच्चाभ्रम् ।
एवा मत्सव दुर्भूतं ब्रह्मनुत्तपायति ॥

(अथर्व. १०-१-१३)

परमात्मा के उपासक के पाप को परमात्मा किस प्रकार से दूर कर देता है इसके बारे में मन्त्र में कहा गया है कि जैसे वायु भूमि से धूलि को और अन्तरिक्ष से मेघ को विच्युत कर देता है। इसी प्रकार परमात्मा द्वारा धकेला हुआ पाप साधक से दूर चला जाता है। इसीलिए महर्षि दयानन्द जी अपने यजुर्वेद भाष्य (३-४८) में लिखते है - 'मनुष्यों को उचित है कि पाप की निवृत्ति धर्म की वृद्धि के लिए परमेश्वर की प्रार्थना निरन्तर करके जो मन वाणी वा शरीर से पाप होते हैं उनसे दूर रह के जो कुछ अज्ञान से पाप हुआ हो उसके दुःख रूप फल को जान कर फिर दूसरी बार उसको कभी न करें किन्तु सब काल में शुद्ध कर्मों के अनुष्ठान की ही वृद्धि करें।'

यदि व्यक्ति संसार में पाप कर्मों से बचना चाहता है तो उसे निरन्तर परमात्मा की उपासना करनी चाहिए। उपासना से ही हम पापरहित होकर अपने जीवन को सार्थकता प्रदान कर सकते हैं। सन्ध्या में -

सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत ।
दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः ॥ ...

आदि अघमर्षण के इन मन्त्रों में परमात्मा की विलक्षणता के बारे में बताया गया है। इन सब मन्त्रों का भाव इस प्रकार से है कि उस परमपिता परमात्मा ने ही सबसे पहले चेतन, जड़ और अति प्रकाशित तप या ज्ञान से क्रमशः सृष्टि का सृजन किया। ब्रह्मदिन के बाद ब्रह्मरात्रि उत्पन्न हुई। रात्रि के बाद प्रकृति के मूल तत्वों का समूह गतिमान हुआ। इस मूल तत्व के समूह से (की गति से) जगत का चोनिरुप महत् अण्ड उत्पन्न हुआ। इसी परमात्मा ने फिर महद् अण्ड से सूर्य, चन्द्र आदि लोकों को पूर्व कल्प के समान बनाया। इसी प्रकार फिर द्युलोक, पृथ्वी, अन्तरिक्ष और गतिशील उल्का पिण्डों को बनाया.. इस मन्त्र में परमात्मा को ही समस्त रचना का कर्त्ता बताया गया है।महर्षि दयानन्द जी कहते है कि अघमर्षण मन्त्रों के चिन्तन से व्यक्ति पापों से बच सकता है। इसका उन्होने मनोवैज्ञानिक आधार भी प्रस्तुत किया है। संस्कार विधि में वे लिखते हैं कि सृष्टिकर्ता परमात्मा और सृष्टि क्रम का विचार उपर्युक्त मन्त्रों से करें और जगदीश्वर को सर्वव्यापक, न्यायकारी, सर्वत्र, सब जीवों के कर्मों के द्रष्टा को निश्चित मान से पाप की

ओर अपने आत्मा और मन को कभी न जाने देवें, किन्तु सदा धर्मयुक्त कर्मों में वर्तमान रखें।

व्यक्ति अपनी अज्ञानता के कारण ही पाप कर्म करता है और इसका मुख्य आधार है व्यक्ति का अहंकार। अहंकार में आकर ही व्यक्ति मुख्यतः पाप कर्म करता है मगर जब उस परमात्मा की विलक्षण शक्ति और गुणों का व्यक्ति ध्यान करेगा तो उसका अहंकार एकदम निर्मूल ही हो जाएगा। पाप करने का एक कारण व्यक्ति का भय भी होता है। मगर जब परमात्मा के न्यायकारी आदि गुमों का चिन्तन व्यक्ति करेगा और मन, वचन, कर्म से अपने आपको परमात्मा के प्रति समर्पित करेगा तो उसे निर्भयता प्राप्त होगी। ऋत, सत्य और तप से व्यक्ति को ज्ञान, कर्म और उपासना की भावना को अपने भीतर समाहित करके तदनुसार अपना जीव बनाना चाहिए। यही पाप से बचने का मार्ग है। अघमर्षण मन्त्रों के मनन और चिन्तन से दोनों ही अर्थात अहंकार और भय समाप्त हो जाते हैं। ज्ञान, कर्म और उपासना के निरन्तर अभ्यास से व्यक्ति के मल, विक्षेप और आवरण कटते चले जाते हैं। इसलिए विवेक प्राप्त करने तथा पापों से मुक्ति प्राप्त करने के लिए उपासना अनिवार्य है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी 'उपदेश मंजरी' में लिखते है.. "फिर यह भी है कि उपासना के द्वारा आत्मा में सुख का प्रादुर्भाव होता है। इस उपाय को छोड़ पापनाशन करने के लिए अन्य उपाय नहीं है। काशी जाने से हमारे पाप दूर होगे यह समझ, अथवा तोबा करने से पाप छूटना, किवां हमारे पाप का भार अमुक भद्र पुरुष लेकर शूली चढ़ गया इत्यादि अन्य लोगों की सारी समझ अप्रशस्त है अर्थात भूल है। उपासना के द्वारा विवेक उत्पन्न होता है, विवेक होने से क्षणिक (नाशवान्) वस्तुओं से शोक और आनन्द ये दोनों नहीं होते ...।"

प्रभु से प्रार्थना करनी चाहिए कि वे पाप से हमारी रक्षा करें, मगर केवल प्रार्थना कर लेना ही पर्याप्त नहीं है। महर्षि दयानन्द जी 'आर्योद्देश्यरत्नमाला' में लिखते है - "अपने पूर्ण पुरुषार्थ के उपरान्त, उत्तम कर्मों की सिद्धि के लिए परमेश्वर वा किसी सामर्थ्य वाले मनुष्य का सहाय लेने को 'प्रार्थना' कहते है। सत्यार्थ प्रकाश (सप्तम समुल्लास) में महर्षि जी बहुत ही सुन्दर एवं सार्थक उपदेश देते हुए कहते है- देखो सृष्टि के बीच में जितने प्राणी है अथवा अप्राणी, वे सब अपने-अपने कर्म और यत्न करते है। जैसे पिपीलिका आदि सदा प्रयत्न करते, पृथिवी आदि सदा घूमते, और वृक्षादि सदा बढ़ते-घटते रहते है, वैसे यह दृष्टान्त मनुयों को भी ग्रहण करना योग्य है। जैसे पुरुषार्थ करते हुए पुरुष का सहाय दूसरा भी करता है, वैसे धर्म से पुरुषार्थी पुरुष का सहाय ईश्वर भी करता है। जैसे काम करने वाले पुरुष को भृत्य करते हैं (अर्थात रखते हैं) और अन्य आलसी को नहीं। देखने की इच्छा करने और नेत्रवाले को दिखलाते हैं, अन्धे को नहीं। इसी प्रकार परमेश्वर भी सब प्रकार के उपकार करने की प्रार्थना में सहायक होता है, हानिकारक कर्म में नहीं। जो कोई गुड़ मीठा है ऐसा कहता (ही) है, उसको गुड़ प्राप्त वा उसको स्वाद प्राप्त कभी नहीं होता और जो यत्न करता है, उसको शीघ्र वा विलम्ब से गुड़ मिल ही जाता है। महर्षि अन्यत्र लिखते है- 'सब मनुष्यों को अपने मित्र और सब प्राणियों के सुख के लिए परमेश्वर की प्रार्थना करना और वैसा ही अपना आचरण करना चाहिए... जैसी परमेश्वर की प्रार्थना करें वैसा ही उनको पुरुषार्थ भी करना चाहिए' (यजु. ३-२६) वास्तव में प्रार्थना तो अपने भीतर एक आत्मविश्वास और उत्साह प्राप्त करने के लिए की जाती है और इसके लिए पूर्ण श्रद्धा व समर्पण की जरुरत होती है। समर्पण के लिए व्यक्ति को अहंकार रहित होना भी अनिवार्य है। असल में हर कोई छोटा व्यक्ति किसी बड़े की सहायता चाहता ही है और यह एक स्वाभाविक कामना है। हम किसी न किसी समर्थ एवं शक्तिशाली की सहायता में ही अपने आप को सुरक्षित अनुभव कर पाते हैं, और सही ढंग से की गई प्रार्थना से व्यक्ति को यह उपलब्धि प्राप्त होती है। इस प्रकार कर्मशीलता की भावना से भरी, अहंकाररहित, श्रद्धा, समर्पण और हृदय से निकली हुई प्रार्थना निश्चितरुप से फलीभूत होती है। ऋ.भू.भू. में महर्षि लिखते हैं- इस प्रकार से जो मनुष्य अपनी सब चीजें परमेश्वर के अर्थ समर्पित कर देता है, उसके लिए परमकारूणिक परमात्मा सब सुख देता है, इसमें सन्देह नहीं।

पता - महर्षि दयानन्द, महादेव सुन्दरनगर, जिला-मण्डी (हि.प्र.)

वैचारिक

संस्कार क्यों ?

- पं. रामदेव शर्मा

अति प्राचीनकाल में ऋषियों ने मनुष्यों को सुसंस्कृत बनाने हेतु बहु विधि संस्कारों की योजना की ऋषिकृत गृह्य सूत्रों में गर्भाधान से मत्यु पर्यन्त संस्कारों की श्रृंखला का वर्णन मिलता है और प्रत्येक संस्कारों की क्रिया में वैज्ञानिक व आध्यात्मिक पृट दृष्टि गोचर होता है। संस्कारों की अधिक से अधिक अड़तालीस और न्यून से न्यून दस संख्या मिलती है किन्तु दयानिधे ऋषि दयानन्द ने मनुस्मृति व ग्रह्यसूत्रों के आधार पर अति उपयोगी सोलह संस्कारों को ही मान्यता प्रदान की है, इस हेतु संस्कार विधि नामक ग्रन्थ की रचना कर मानव मात्र पर बड़ा उपकार किया है। अब स्थिति ये है कि किसी भी पौराणिक विद्वान से पूछे कि संस्कार कितने हैं तो वे तुरन्त सोलह संस्कार बताता है।

ऋषि दयानन्द ने अनेक ग्रन्थों की रचना की है किन्तु अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका और संस्कार विधि ये तीनों ग्रन्थ अनुपम है। इसलिये इनकी गणना वृहतृती ग्रन्थों में आती है।

सम्भवतः ऋषिवर को सत्यार्थ प्रकाश के लेखन काल में ही संस्कार विषयक ग्रन्थ लिखने का विचार हुआ होगा, चूंकि सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय समुल्लास में ही लिखा है, माता-पिता के अति उचित है कि गर्भाधान से पूर्व मध्य और पश्चात मादक द्रव्य, दुर्गन्ध, रुक्ष, बुद्धि नाशक पदार्थ का सेवन छोड़ जो शान्ति, आरोग्य, बल, बुद्धि, पराक्रम और सुशीलता से सभ्यता को प्राप्त करे जैसे घृत, दुग्ध, मिष्ठान आदि पदार्थों का सेवन करें जिससे रज, वीर्य, दोष से रहित होकर अत्युत्तम गुण युक्त संतान हों।

बालक के शरीर निर्माण पर माता-पिता के कुल, आहार-विहार, आचार-विचार व जलवायु का प्रभाव पड़ता है। कुछ देशों में जो बच्चे अगस्त से अक्टूबर तक पैदा होते हुये, विकास बुद्धि वाले, हीन अंग वाले तथा अल्पायु वाले पैदा हुये। परीक्षण से ये तथ्य सामने आये कि उन देशों में नवम्बर से जनवरी के अत्यधिक शीत बढ़ने पर शराब, मांस आदि के सेवन से गर्भस्थ शिशुओं पर कुप्रभाव पड़ा। जलवायु और वातावरण के बारे में भी नागाशाकी, हीरोशिमा व भोपाल गैस काण्ड के बाद जो बच्चे पैदा हुये अधिकांश विकलांग या मनबुद्धि वाले हुये।

ऐतिहासिक ग्रन्थ रामायण, महाभारत आदि स्वतः प्रमाणित करते है कि माता-पिता के आहार-विहार, आचार-विचार का गर्भस्थ शिशु पर अत्यधिक प्रभाव पड़ता है, बालक-गर्भकाल से सी संस्कार प्राप्त करता हुआ जन्म लेता है। बालक के पूर्व जन्मस्थ, शुभा-शुभ कर्म साथ ही आते हैं। इसलिए उत्तम संस्कारों से अंलकृत करने वाला माता-पिता व आचार्य मिल जाये वे बालक बड़े भाग्यशाली होते है। अतः उत्तम संस्कारों के विषय स्मृति दिलाते है।

महाबली व धार्मिक अश्वथामा को मां ने संस्कार दिये। तेरे आगे वेद और पीछे धनुषबाण है। अतः वह धार्मिक व पराक्रमी हुआ। वीर युद्धा अभिमन्यु के बारे में गर्भस्थ संस्कार का सबको विदित है। माता मदालसा ने अपने तीन पुत्रों को संस्कार से संन्यासी तथा चौथे पुत्र अलर्क को महान सम्राट बनाया।

नेपोलियन वोना पार्ट की मां पराक्रमी वह गर्भवती थी सेना की परेड देखा करती थी- वीर सैनिक बना।

ब्रिटेन का प्रिंस बिस्मार्क जब गर्भ में था तो उसकी मां अपने किले के ध्वंश अवशेषों को देखा करती थी तो प्रिन्स द्वितीय विश्व युद्ध में फ्रान्स का दुश्मन (वैरी) ही रहा।

वीर बालक लव-कुश, हनुमान, शिवाजी, श्रवण कुमार आदि के माता-पिता या आचार्य के द्वारा दिये संस्कार ही तो थे जो ऐतिहासिक प्रेरणादायी बने।

सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय समु. मैं ऋषिवर लिखते है कि वह सन्तान बड़ा भाग्यवान है जिस के माता-पिता धार्मिक व आचार्य विद्वान हैं। अतः उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट हुआ कि मनुय को सुसंस्कृत करने हेतु ही दयानिधि दयानन्द ने संस्कार विधि नामक ग्रन्थ की रचना की।

१. महर्षि संस्कार विधि की भूमिका में लिखते है - "शरीर और आत्मा के सुसंस्कृत होने से धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष प्राप्त हो सकते हैं और सन्तान अत्यन्त योग्य होते हैं इस लिये संस्कारों का करना सब मनुष्यों को अति उचित है।"
२. जिस वस्तु या आत्मा को संस्कारी द्वारा शुद्ध किया जा कर वह पवित्र है इससे भिन्न संस्कार युक्त नहीं वह अपवित्र। जिस प्रकार विचारशील मनुष्य औषधियों को शुद्ध कर सुख की वृद्धि के लिये निर्माण करते हैं इसी प्रकार, शरीर, आत्मा को शुद्ध करना चाहिये।
३. किसी भी पदार्थ के दोषों को निवृत कर यथेष्ट प्रयोग में लाने के लिये परिष्कृत करने का नाम संस्कार है।
४. स्वन्तव्या मन्तव्य प्रकाश से महर्षि लिखते हैं- संस्कार उसको कहते है जिससे शरीर, मन और आत्मा उत्तम होवे।

आत्मा जन्म जन्मान्तरों के शुभा-शुभ कर्मों का वाहक होता है। अतः पूर्व जन्मों में किये गये शुभा-शुभ कर्मों के प्रभाव को अभिभूत कर शुभ-संस्कारों से परिष्कृत कर मनुष्य को उन्नति के मार्ग पर अग्रेषित करने के लिये संस्कार अति आवश्यक है। क्योंकि बालक पवित्र वातावरण पाकर उन्नतिशील, अध्ययनशील, स्वाध्यायशील व सदाचारी बनकर गृहस्थ को सुखी करते हुये समाज व राष्ट्रोत्थान में सहयोगी होता है। अन्यथा संस्कार विहीन व्यक्ति निन्दा का पात्र तो होता ही है समाज व राष्ट्र के लिये भी घातक होता है। संस्कार विहीन नेताओं के अंशमात्र वाक्य देखिये। निठारी जैसे वीभत्स काण्ड जिसने मानवता को झकजोर कर रख दिया।

तत्कालीन सत्तारुढ़ पार्टी के नेता बड़ी बेशर्मी से कहते है कि छोटे मोटे काण्ड तो होते ही रहते हैं। बलात्कार जैसे जघन्य अमानुषिक अपराधों पर बड़ी लज्जा जनक बाते कहते हैं। जवान लड़के है, गलती हो जाती है, फांसी पर थोड़े ही चढ़ाना चाहिये। जब बिहार में बाढ़ आयी सरकारी सहायता नहीं पहुंची जब पत्रकारों, टी.वी. एन्करों ने कहा मुख्यमंत्री बाढ़ पीड़ितों को सहायता नहीं पहुंच रही है, आप कुछ करिये लोग भूख के मारे चूहे मार-मार कर खा रहे हैं। तब तत्कालीन मुख्यमंत्री (नितीश कुमार जी पूर्व) कहते हैं कौनों बात नाही मैं बहुत पहले से चूहे खा रहा हूं। तो थोड़ी सी संस्कार विहीनों की वानगी है। देश का दुर्भाग्य के देश को स्वतन्त्र होते ही देश संस्कार विहीन नेताओं के हात में चला गया। कारण जिन देश भक्तों के बलिदान, त्याग, तपस्या से देश स्वतन्त्र हुआ उनमें से अधिकांश ने बलिवेदी पर आहुति दे दी और जो बच गये वो अंग्रेजों की अमानुषिक यातनाओं से अशक्त हो गये और उनमें से जो बच गये उन्होने त्याग पूर्वक कहा हमारा संकल्प देश आजाद कराने का था सत्ता का नहीं। संस्कार विहीन सत्ता लोलुपी स्वार्थी सत्ता पर काबिज हो गये। इसका फल जनता भोग रही है।

हरिद्वार गुजरावाला मोहल्ले में महामना श्री प्रकाश वीर शास्त्री के अथक प्रयासों से आर्यसमाज का भवन बन कर जब तैयार हुआ उसके उद्घाटन हेतु प्रधानमंत्री को आमंत्रित किया वह आये यज्ञमान बने यज्ञ पर बैठे कार्यक्रम के पश्चात पत्रकारों ने यज्ञ के बारे में पूछा तो कहने लगे कि ये आर्यसमाजी है, लोगों को खाने के लिये घी नहीं है ये व्यर्थ में जला रहे हैं। यदि भारतीय संस्कृति के थोड़े भी संस्कार होते या वायुमण्डल का वैज्ञानिक ज्ञान होता तो ऐसी बात कभी नहीं कहते। मि. ह्यूम द्वारा स्थापित भारतीय कांग्रेस प्रारम्भ से ही भारतीय संस्कार और संस्कृति को छिन्न-भिन्न करने में लगी रही। राजीव से सोनिया (मनमोहन) के शासन काल में तो हद हो गयी। पहले गणित के अंक निकाले उनकी जगह आंग्ल भाषा के अंक स्थापित किया फिर धीरे-धीरे संस्कृत भाषा को ही मृत भाषा का प्रचार कर पाठ्य पुस्तकों से निकाला। जरा विचार कीजिये वेद, उपनिषद, ग्रह्य सूत्र, उपवेद, ब्राह्मण ग्रन्थ आयुर्वेद ग्रन्थ ऐतिहासिक रामायण, महाभारत, गीता आदि अनेक ग्रन्थ संस्कृत भाषा में ही है बड़ा गहरा कुचक्र चलाया जब भाषा ही समाप्त हो जायेगी तो भारत की संस्कृति-सभ्यता स्वतः ही समाप्त हो जायेगी। अभी २०-४-२०१७ को गौवध के विषय में श्री पंवार जी अपने सुन्दर मुखारविन्द से दूरदर्शन पर कहते है - कि वीर सावरकर कहा करते थे कि जब तक गाय की उपयुक्तता है तब तक तो ठीक जब उपयुक्तता समाप्त हो जाय तो वध करने में कोई दोष नहीं। प्रथम तो मागरिट कांग्रेसियों के मुख से वीर क्रान्तिकारियों का नाम लेना शोभा नहीं देता। (चूंकि उनके जीवित रहते हमेशा

विरोध करते रहे) दूसरे क्या बूढ़े नेता या मनुष्य की उपयुक्तता समाप्त हो जाय उसका वध कर देना चाहिये ? जरा पढ़ो ऋषि दयानन्द को जो गाय के बारे में लिखते हैं गाय सुख तृण और घास खा कर अमृत तुल्य पेय प्रदान करती है और उसके बाद भी औषध युक्त मूत्र से रोगाणुओं को दूर करती है था गौबर से उत्तम खाद बनता है। जिससे अच्छी फसल पैदा होता है, कृषक उन्नत होता है और ये बूढ़े नेता वातावरण को दूषित करने के अलावा किसी काम के नहीं। उपयुक्तता समाप्त तो क्या करें ?

वीर सावरकर के ये वाक्य याद क्यों नहीं आया, गौ की रक्षा भारत में राष्ट्रीय कर्त्तव्य है।

अप्रैल माह में कन्हैया नामक व्यक्ति दूरदर्शन पर कह रहा था कि देश की दिशा आर.एस.एस. (राष्ट्रीय स्वयं संघ) तय नहीं करेगा इस देश द्रोही को, हिजबुल लश्कर तैयबा, नक्सली, सिमी, हिजब, आई.एस. हुर्यत आदि देखते। अरे दुर्जन १९६२ के युद्ध में तत्कालीन प्रधानमंत्री नेहरु ने नगरों, ग्रामों, राष्ट्रीय सम्पदा की रक्षा हेतु सहयोग मांगा था और संघ ने बड़ी मुस्तैदी से नगरों, ग्रामों की रक्षा हेतु ब्लेक आऊट में पहरा दिया जाना, माल की रक्षी की, इसके ठीक इसके विपरीत कम्युनिष्टों ने चीन का साथ दिया था। तथा गुजरात के पोरबंदर में जब बाढ़ आई तो वहां पर जब स्वयं इन्दिरागांधी गयी थी। संघ वाले सेवा करते हुए देखे। मंच से उन्होंने कहा यहां तो नेकरधारी पीड़ितों की प्रशंसा की। कहा कि भारत में आपदा के समय कोई भेदभाव नहीं रह जाता। अभी मई माह के प्रारंभ से दिनों में तेलगांना में पुलिस के कुछ द्रेशद्रोही व अराजक तत्वों की धरपकड़ की तो दिग्विजयसिंह का बयान आया कि तेलगांना पुलिस मुस्लिम युवाओं को परेशान कर रही है। अरे ओ मैकाने के मानस पुत्रों तुम्हें तेलगांने के पुलिस जवान दिख रहे हैं कश्मीर में पत्थरबाज मुसलमान युवक नहीं दिख रहे, हाय ये कैसा दुर्भाग्य के कि सन् १९४७ से ही चापलूस सत्तालोलुपी, संस्कारविहीन सत्ता पर काबिज रहे और अतितुष्टि करण व अपसंस्कृति का जो बीज रोपा वह अब काटेदार वृक्ष बनकर राष्ट्रीय लोगों को कष्ट दे रहा है।

उच्चतम न्यायालय के उन न्यायधीशों को नमन करते हुये कोटिशः धन्यवाद करते हैं कि निर्भया काण्ड के नरपिशाचों को मृत्यु दण्ड दिया और प्रक्रिया का अच्छा सन्देश आया। नाबालिक की आड़ में जो दुष्ट बच गया, उसका दुःख है। दुष्कर्मी का उम्र से कोई सम्बन्ध नहीं होना चाहिये। अपराध करने वाला केवल अपराधी है।

पता : आर्यसमाज भीममण्डी कोटा (राजस्थान)

ज्ञानोदय : "करनी का फल" - स्वामी कूटस्थानन्द

आपने जरुर कुछ ऐसा किया है या फिर कर रहे हैं, जिसके कारण आप दुखी हैं। परमात्मा कभी भूल नहीं करते। प्रकृति कभी गलती नहीं करती। तुम अपनी जिन्दगी को देखो, तुमने जो कुछ दिया है, वही मिल रहा है। तुमने जो कुछ बोया है, वही मिल रहा है। तुम भूल जाते है, बोते समय तुम सोचते हो बीज तो हमने बोये थे अमृत के और फल मिल रहे हैं विष के। किया तो था हमने भला और हो रहा है बुरा। दिये थे आशीर्वाद और मिल रही है गालियाँ। दिया था प्यार और मिल रही है फटकार। नहीं, यह संभव नहीं है। यहां इंच-इंच का हिसाब है, रत्ती-रत्ती का हिसाब है। तुमने जो किया है, वही मिल रहा है। ईश्वर जो करते हैं वह आपके हित के लिए है, मगर धीरज रखो समय आने पर पता लगेगा।

सौजन्य : श्री नित्यानन्द वानप्रस्थी जी, रायगढ़

समालोचनात्मक

ऐसे धर्म को धिक्कार है, जो हमें सत्यता की ओर जाने से रोके

लेखक : विवेक प्रिय आर्य,

प्रत्येक प्राणी का यह स्वभाव होता है कि वह दुःख से बचना तथा सुख को पाना चाहता है। फिर मनुष्य तो सृष्टि का सबसे श्रेष्ठ प्राणी है, वह क्यों नहीं सुख की प्राप्ति के लिए पूर्ण पुरूशार्थ करेगा ? आज संसार भर के प्रबुद्ध मनुष्य (चाहे वे किसी भी महत्वपूर्ण पद पर आसीन हो) संसार को सुखी बनाने का यत्न अपने–अपने ढ़ंग से करते प्रतीत हो रहे हैं। परंतु इसके उपरांत भी आज सम्पूर्ण मानव समाज अशंति, आतंक, हिंसा, घृणा, मिथ्या, छल, कपट, ईर्श्या, राग, द्वेष से ग्रस्त होकर अति दुःखी व अशांत है। विचार आता है कि क्या कारण है कि चिकित्सा करते रहने पर भी रोग बढ़ता ही जा रहा है? मेरा मानना है कि इस सब का मूल कारण सत्य और वास्तविकता से अनभिज्ञ रहना अथवा जानकर भी उसके अनुकूल व्यवहार न करना ही है। आज सारे संसार में विकास की होड लग रही है। हम छल से दूसरों को गिराकर उससे आगे जाना चाहते हैं। दूसरों की झोपडियां जलाकर अपने भव्य भवन बनाना चाहते हैं, दूसरों की थाली से सूखी रोटियां भी छीनकर स्वयं सुस्वाद सरस भोजन करना चाहते हैं, दूसरों के तन से जीर्ण षीर्ण वस्त्र भी छीनकर स्वयं बहुमूल्य वस्त्र पहनकर फैशन करना चाहते हैं तथा दूसरों का गला दबाकर स्वयं एकाकी अमर जीवन जीना चाहते हैं। क्या ऐसा जीवन हमारी सुख, शांति का विनाशक नहीं ? क्या मानवीय हत्या का हनन करने वाला नहीं है ? हमारा विकास तो तभी होगा जब हमारा जीवन सत्यता से परिपूर्ण होगा। क्योंकि सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं होता। धर्म के नाम पर, ईश्वर के नाम पर, देवी–देवताओं के नाम पर जितना रक्तताप व वैमनस्यता संसार में हो रही है, संभवतः उतना किसी अन्य कारण से नहीं। धर्म के नाम पर यह पाप क्यों? धर्म और ईश्वर के नाम पर ईर्श्या, राग, द्वेष, घृणा, हिंसा क्यों? हमें धर्म का ऐसा सच्चा स्वरूप संसार के सामने लाने का प्रयास करना होगा, जिसमें पाखण्ड, अंधविश्वास व असत्य का कोई स्थान न हो। यही विचार संसार के ऋषियों (ब्रह्मा से लेकर जैमिनी पर्यन्त) का रहा है। महर्षि दयानंद सरस्वती तो परमाणु से लेकर परमेश्वर तक का यथार्थ ज्ञान व उससे अपना व दूसरों का उपकार करना ही विद्वानों का कर्तव्य बताते हैं। दुर्भायवश महाभारत के समय से वेद के नाम पर, धर्म के नाम पर, ईश्वर के नाम पर, देवी–देवताओं के नाम पर कुछ विकृतियों ने जन्म लिया और वेद केवल कर्मकाण्ड तक ही सीमित रह गया। उस वैदिक कर्मकाण्ड के नाम पर मांसाहार, व्यभिचार, पशुबलि, नरबलि, स्त्री व शूद्र वर्ग के प्रति हीन भावना, मदिरापान आदि कुरीतियां इस देश में फैल गईं। एक ईश्वर की जगह अनेक देवी–देवता प्रचलित होकर विश्व में हजारों मत–मतान्तर चल पड़े।

सर्वशक्तिमान और सर्वसामर्थ्य सम्पन्न ईश्वर शक्ति के अस्तित्व में रहते हुए भी इन देवी–देवताओं (वह भी एक दो नहीं, चार छः नहीं अपितु पूरे तैतीस करोड) को प्रभाव में लाने की आवश्यकता क्यों हुई ? इसका किसी के पास कोई तर्क संगत उत्तर नहीं है। जीवन में पूजा का किसी रूप में कोई भी उपयोग संभव नहीं है और पूजा से कुछ भी प्राप्त कर पाना संभव नहीं, व्यक्ति जो कुछ प्राप्त करना चाहता है या करता है वह केवल अपने पौरूष और पुरूषार्थ भरे प्रयासों से प्राप्त करता है। लेकिन सहज और सरलतम रूप में प्राप्त करने की मनुश्य की स्वाभाविक मनः प्रवृत्ति ने उसे पौरूष और पुरूषार्थ से दूर ढकेल दिया और पूजा से वह कुछ भी प्राप्त नहीं कर सका। इस कारण देश और समाज पतित होता चला गया। समस्याएं बढ़ती गईं, समाधान संभव नहीं हो सका। देश पराधीन हो गया, विदेशी आक्रमणकारी हमारी राजसत्ता को हथियाकर बैठ गये। अत्याचार हो रहे, समाज में हा हाकार हो रहा, समाज लुटता–पिटता रहा पर कोई बचाने वाला पैदा ही नहीं हुआ। जिन देवी–देवताओं पर हम विश्वास साधकर बैठे वह दीन–हीन स्थिति में मौन धारण कर देवालयों में बैठे कांप रहे थे। हमारी रक्षा करना तो दूर वह स्वयं अपनी रक्षा भी नहीं कर पा रहे थे। हम ढ़ोल, मजीरा, शंख, झांझर और चिमटा लेकर उन पत्थर के देवी–देवताओं के सामने गीत गाते कीर्तन करते रहे। मौत के भय से थर–थर कांपते कायर कायर और क्लीवजन कंठीमाला हाथ में लेकर ग्रहों, नक्षत्रों एवं राशियों में अपना भाग्य लेख पढ़ने के लिए जन्मकुण्डली बिछाकर बैठे रहे। मंदिरों–देवालयों में जाकर देवी–देवताओं की मूर्तियों के सामने माथा रगडते रहे लेकिन उनके दिव्य चक्षु इहलोक के पैशाचिक दुराचारों को कभी नहीं देख

सके। विदेषी आक्रांता इन मूर्तियों को तोडकर चकनाचूर करते रहे। उन्हें खण्ड–खण्ड कर कुओं, पोखरों में फैंका गया, पर न तो ये देवी–देवता कुछ कर सके और न उनके पुजारी। बल्कि यह पुजारी तो बलात्कार पीडित महिला की तरह असहाय और विवश होकर आंसू बहाते रहे। यदि इन्होंने इसके विपरीत स्वयं पौरूष की भाशा पढ़ी होती, धर्म और ईश्वर के सच्चे निराकार स्वरूप को समझा होता तो कोई शक्ति इस देश की ओर आंख उठाकर नहीं देख पाती। सोमनाथ मंदिर की कहानी जब हमारे स्मृति पटल पर उभर कर आती है तो आंखों में खून उतर आता है। हम केवल पौराणिक आख्याओं तक सीमित बने रहे। भूगोल से हम प्रारंभिक परिचय कभी प्राप्त नहीं कर सके। इसलिए धरती को कभी शेषनाग के फन पर टिका दिया, कभी कष्यप की पीठ पर और कभी गाय के सींग पर। क्योंकि सभी जीवधारियों की कालावधि निश्चित है, अतः झूठ को स्थाई रूप देने की दृश्टि से इन तीनों को त्रिकालजयी बना दिया और धरती का गैंद रूप देकर इधर से उधर उठाकर रखते रहे। झूठ में हमारी अगाध आस्था रही है कि हमें अपने पूर्वजों की कही बात का भी ध्यान नहीं रहता। आर्यभट्ट और वरामिहिर हमारे ही पूर्वज थे, जिन्होंने पृथ्वी, सूर्य और चन्द्रमा की परिधि, उनका व्यास और उनकी आपस की दूरी की माप सटीक रूप में दी थी। लेकिन हमारे झूठ के क्षेत्र में वह कहीं बाधक न बन जाये इसलिए उसे जान–बूझकर दृष्टि ओझल कर दिया। हमारे यह पुजारी के व्यवसायी टिपकादास धरती पर फल कटहेरी की तरह ब्रह्म का बीज बोते रहे हैं, जिनके बेल रूप में फैलकर कहीं पैर टिकाने को स्थान नहीं छोडा है। हमारे यहां महाभारत के महानायक कर्मयोगी श्रीकृष्ण और गीता के रूप में उपलब्ध उनकी वैचारिक धरोहर युगों युगों तक मनु पुत्रों का मार्गदर्शन कर सकती है। लेकिन इन टिपकादासों ने उसकी विषयवस्तु की सहज विश्वसनीयता पर तमाम तरह के प्रश्नवाचक चिन्ह खडे कर दिये हैं। श्रीकृष्ण जैसे योगीराज, अदम्य व्यक्तित्व पर भी इन मिथ्यावाद के प्रणेता टिपकादासों ने अपनी अतृप्त यौन पिपासा को विभिन्न रूपों में उन पर निर्ममता से प्रत्यारोपित कर उन्हें रसिक बिहारी, छैल बिहारी, रास बिहारी, लीला बिहारी और बांके बिहारी जैसे तमाम तरह के नाम देकर उन्हें राधा के पैरों में महावर रचाने बैठा दिया।

आज धरती पर उपलब्ध सभी सुख सुविधाएं और उसके उपकरण स्वयं मानव ने पैदा किये हैं। किसी देवी देवता का उसमें इंच मात्र का योगदान नहीं है किंतु पाखण्डी–मिथ्यावादी अपने स्वार्थ हित में उसका विभिन्न रूपों में गुणगान करते चले आ रहे हैं। कालान्तर में धीरे–धीरे इस देवत्व भाव को समान भाव से पशु पक्षियों पर भी आरोपित कर दिया और अंत में यह देवता पत्थरों पर भी उकेरे जाने लगे। पराकाश्ठा की स्थिति तो यहां तक पहुंच गई कि ढ़ेले पर कलावा बांधकर उसे सीधे–सीधे गणेश भगवान बना दिया गया। इस देश में भिखारी से लेकर पुजारी तक मांगकर खाने वालों की फौज खडी होती चली गयी। ऋषि ने 'एको ब्रह्म द्वितीयो नास्ति' का जो उपदेश दिया उसके विपरीत बहुदेवतावाद का अंतहीन सिलसिला खडा हो गया, जो आज भी समाप्त होने का नाम नहीं ले रहा है। पत्थरों, धातुओं और लकडियों के टकड़ों पर तमाम तरह के देवी–देवताओं की विचित्र–विचित्र शक्लें उतारकर देवालयों, मंदिरों और घरों में खडी कर दी। यह देवी–देवता आज तक किसी को कुछ नहीं दे सके, बल्कि स्वयं इस कमाऊ समाज पर भार बन जाते हैं। हमारे ही पैदा किये हुए देवता, जो हमारी ही दी हुई व्यवस्था पर जीवित हैं, हमें उन्हीं के आगे मंगिता बनाकर बिठा दिया। वैसे सृष्टि नियम के विरूद्ध बातें सभी मतों में हैं, जैसे मुस्लिम भाई कहते हैं कि हमारे पैगम्बर मोहम्मद सहाब ने एक ही उंगली से चांद के दो टुकडे कर दिये। इसी प्रकार हमारे पुराणों में सबसे अधिक चमत्कारिक बाते हैं, जैसे हनुमान ने अपने बचपन में ही सूर्य को गाल में रख लिया, कुंती कर्ण कान से उत्पन्न हुआ, योगेष्वर श्रीकृष्ण ने गोवर्धन पर्वत अपनी उंगली पर उठा लिया, श्रीकृष्ण द्रोपदी का चीर बढ़ा दिया आदि। भूत–प्रेत, गण्डा, डोरी, श्राद्ध–तर्पण, फलित ज्योतिश, गृहों का नाराज होना या खुश होना तथा मूर्तिपूजा व अवतारवाद का मानना अंधविश्वास व पाखण्ड है। क्योंकि यह सब बातें प्रकृति नियम के विरूद्ध हैं। इसलिए इनको न मानकर वैदिक धर्म को मानना ही हर व्यक्ति के लिए श्रेयस्कर व लाभदायक होगा। वैदिक धर्म में ईश्वर के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करने के लिए संध्या करना (जिसे ब्रह्मयज्ञ कहते हैं), दूषित वातावरण को शुद्ध करने के लिए हवन करना (जिसे देवयज्ञ कहते हैं)। शरीर को स्वस्थ्य रखने के लिए यम–नियमों से समाधि तक पहुंचने के लिए अश्टांग योग करना, दूसरों की भलाई के लिए परोपकार करना, वेदों सहित सभी आर्श ग्रन्थों को पढ़ना और उनके अनुसार जीवन बनाना आदि मुख्य सिद्धांत वैदिक धर्म के हैं। इसलिए हम अपने जीवन को पवित्र स्वस्थ्य रखना चाहते हैं तो हमें अन्य मतों व पन्थों को छोड़कर वैदिक धर्म अपनाना चाहिए, जिससे हम अपने परिवार, समाज, राष्ट्र व केवल मानव मात्र ही नहीं बल्कि प्राणी मात्र के प्रति अपने कर्तव्य का पालन करते हुए अपने जीवन को सफलता की ऊंचाईयों को छूते हुए मोक्ष के अधिकारी बने। इससे उत्तम अन्य कोई मार्ग नहीं है।

निवास : ऊंचागांव (सुसाइन), नसीरपुर
(हाथरस/मथुरा) उ.प्र. – 281308 मोबा : 09719910557

विचारात्मक

तमसो मा ज्योतिर्गमय

(अंधकार से प्रकाश की ओर एक यात्रा)

- आनन्द प्रकाश गुप्त

"हे प्रभु हमें अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो। हमें ऐसी प्रेरणा दो कि हारी जीवन यात्रा अज्ञान से ज्ञानवान बनने की ओर हो।" संसार के प्रत्येक कोने में बसा हुआ बुद्धिशील समाज अपने अध्यात्मिक विकास के लिए एक ऐसे सर्वशक्तिमान शक्ति की ओर उन्मुख होता रहा है जिसका नाम परमेश्वर (ईश्वर) के रुप में हम सब जानते हैं इसी धर्म को साकार रुप में प्रतिष्ठापित करने के लिए हमारा विगत इतिहास दर्शाता है कि हमने कितने पुण्य कार्य, किये कितने धार्मिक संस्थान बनाये, एक निश्चित प्रणाली और परम्परा में बंधकर हमने पूजा-पाठ, कीर्तन-अरदास, प्रार्थना और नमाज अदा किये, फिर भी यह सत्य है कि हम शताब्दियों तक लड़त रहे। हमने धार्मिक ऊँचाईयों को प्राप्त नहीं किया और निरन्तर पीढ़ी-दर पीढ़ी हम पतन के गर्त में गिरते रहे। हम पुण्यकर्मी बने, हम दलबद्ध हुए हमने सामूहिक प्रार्थनाएँ की, हम ईश्वर के अत्यन्त निकट पहुँच गये। हमने पारस्परिक प्रेम, सौहार्द्र, सेवाभाव और चारित्रगत उन्नयन के पाठ पढ़े, शिक्षा ली, अनुष्ठान किये परन्तु हम एक दूसरे के हृदय से दूर होते गये। हमने जितनी ही, पारलौकिक कथाएँ अपने सामाजिक शीर्षजनों से सुनीं हम लौकिक व्यवहार में निम्नता तथा सामाजिक दुराव की ओर ही बढ़े। धर्म ने ही सर्वप्रेक्षा शान्ति और प्रेम का विस्तार किया है और साथ ही धर्म ने ही सर्वपेक्षा नीचता द्वैष और घृणा की भी सृष्टि की है।

वर्तमान में हम देखते हैं समाज में आध्यात्मिक विकास तो व्यवहार में कहीं दिखता नहीं, उल्टे सारा समाज संकीर्णता और कट्टरता के घेरे में घिरा हुआ है। आज समाज को बुद्धि का ऐसा रोग लग गया है जहां उसकी गलत समझ उसे दुर्दम्य पशु बना दे रही है। जहां पर विनाश ही विनाश है। हम धर्म को जानते हैं और यह भी जानते हैं कि धर्म का दर्शन लगभग सभी पंथों का मूलतत्व और उद्देश्य भी समान है। हाँ ! उनके पौराणिक और आनुष्ठानिक भाग भिन्न है। सभी धर्म दर्शन यह कहते है कि ईश्वर दयावान है, वह सबका भला करने वाला है। वास्तव में धर्म मनुष्य का और मनुष्य समाज का आधार है। इसीलिए कहा जाता है कि धर्म की शक्ति जब मानव कल्याणार्थ सही दिशा की ओर परिचालित होती है तो वह मनुष्य को देवता बना देती है और जब वह गलत दिशा में परिचालित होती है उसे शैतान का रुप दे देती है।

यह जो मनुष्य में दलबद्ध होने की प्रवृत्ति है यह उसका मौलिक स्वभाव है और इसी कारण संसार में अलग अलग सम्प्रदाय दिखाई पड़ते हैं। एक ही धर्म समयान्तर में कई गुटों में बंट जाता है जैसे- शैव, शक्ति और वैष्णव जो कि सनातनी हिन्दुओं के ही अलग-अलग सम्प्रदाय है। इसी प्रकार रामनामी और कृष्णभक्त। जैनियों में श्वेताम्बर और दिगम्बर, बौद्धों में महायानी, हीनयानी, बज्रयानी, आदि, मुस्लिमों में सिया और सुन्नी, ईसाईयों में कैथोलिक इसलिए एक जाति, समूह, परम्पराओं और धर्म के अन्तर्गत होने पर भी वह अपने लिए कुछ विशेष चाहता है। वह अलग दिखना भी चाहता है। अलग-अलग सम्प्रदाय उसकी इस वैभिन्नक-मनोवृत्ति की पूर्ति करने का कार्य करते है और इश प्रकार समाज में फूटन और तबकेबाजी बढ़ती ही जाती है। समाज को सबसे बड़ा खतरा इन सम्प्रदायों के ठेकेदारों, पुरोहितों, पण्डितों, मुल्ला-काजियों तथा पादरी और अधिशाषिक मठाधीशें से है। जो अपने को उस धर्म का नुमाइन्दा बताते हैं, जो किसी आदर्श वाक्य की नींव पर खड़ा हुआ रहता है पर वह आदर्श वाक्य मात्र छद्म दिखावे के लिए ही होता है। आदर्श वाक्य की आड़ में इन संस्थाओं में साम्प्रदायिकता के बीजों का वपन अनुयायियों के मन पर किया जाता है। लोक-लालच तथा चमकीले दिखावा के

माध्यम से उन्हें फंसाकर उनका शोषण करने का अनैतिक कार्य किया जाता है। परमेश्वर महान और परम कृपालु है और हम सब उस महान परमेश्वर की पुण्यशील संताने हैं। यदि यह सत्य है तो हमारे भीतर यह कटु-कषाय वृत्ति और मनोभाव कहाँ से आए ? क्या जब तथाकथित धर्म प्रवर्तक पैदा नहीं हुए थे तो क्या उनका परमेश्वर या अल्लाताला भी संसार में नहीं थे ? और यदि थे तो कहां थे ? उनके मतान्ध अनुयायी कहां थे ? इन प्रश्नों पर यदि हम विवेकपूर्ण विचार-विमर्श करें तो संभव है कि इन तबकों में बंटे मतान्ध लोगों की सोच में कुछ परिवर्तन हो और इन्हें सही राह मिले। यही मतान्ध लोग हैं, जो अपना स्वार्थ साधने के लिए सीधे-सीधे मानवमन में शुद्ध-स्वच्छ और सूक्ष्म मानवतावादी तन्तुओं को निरन्तर क्षीण करने का कार्य करते हैं। यही समाज को निम्नता की ओर ले जाते हुए अपने कुकर्मों और असत्य आख्यानों से प्रभावित कर मानव-मानव में विभेद पैदाकर मनुष्यों में एकता में जोड़ने वाले सूत्र को कमजोर कर, तोड़ने का कार्य करते हैं।

वास्तव में कोई भी धर्म, आध्यात्मिक सम्प्रदाय बुरा नहीं है। सभी धर्म मानव को उसकी भलाई का संदेश देते हैं। पारस्परिक प्रेम, सौहार्द्र, सेवाभाव और व्यक्तित्व एवं चरित्र निर्माण ही धर्म की पूंजी है और यही उसका ध्येय है। सभी उस परमेश्वर की सन्तान हैं और सभी के भीतर वही अवस्थित है। यह एक ऐसी अकाट्य बात है जिसे यदि हम अपने चित्त पर बैठा लें तो हम कभी भी किसी से झगड़ नहीं सकते और मतों में विभिन्नता होने पर भी आपसी प्रेम नष्ट नहीं हो सकता। धर्म की शक्ति सर्वश्रेष्ठ और अतिशक्तिशाली है। वह ऊर्जा है, जो विश्वविध्वंश का नहीं वरन विश्व निर्माण का कार्य करती है। वस्तुतः धर्म साम्प्रदायिक नहीं है, स्वार्थी तत्वों ने अपने स्वार्थ साधन के लिए उसे साम्प्रदायिक जामा पहनाया है। धर्म तो मनुष्य में यह शिक्षा देता है कि उसका स्थान असीम और व्यापक है। यह संकीर्ण और तंग दायरे तो स्वार्थगत मनुष्यों ने स्वयं बनाए हैं। धर्म तो परहित, प्रेम, विनम्रता आदि-आदि सद्गुणों का भण्डार है। वह तो मनुष्य में निहित मानवता को और अधिक निखारने का एक सटीक माध्यम है। उसे तो अपना आधिपत्य जमाए एक वर्ग विशेष की सम्पत्ति बताने वाले पोषक के बदले शोषक का साधन, बनाने वाले, मनुष्य में विचारों को रूढ़ियों से ढकने वाले, उसे उसकी विचार बुद्धि को मंद करने वाले धर्मकारियों ने नाना प्रकार के कुसंस्कारों से ढक दिया है। आम जन में मन पर भय और लालच की परत चढ़ाकर उसे कूप-मंडूप बनाने का काम किया है। आज समाज में इस बात की महती आवश्यकता है कि वह स्वयमेव अपनी बुद्धि पर पड़े रूढ़ियों और कुसंस्कारों के तालों को खोले और अपने चित्त को जाग्रत कर आत्मदीप बने।

मनुष्य विकास करे। वह आधुनिकता की ओर बढ़े, पर आवश्यक है कि वह विवेकशील हो और उसकी विकास यात्रा दूरदर्शी लक्ष्य के साथ हो। विकास तो एक प्रक्रिया है। वह एक ऐसा माध्यम है जो हमें अच्छी जीवन, अच्छा समाज बनाने की प्रेरणा देता है। विकास कोई लक्ष्य नहीं है मानव-मानव की समानता। सभी के अधिकार समान हो। सभी कर्म जो समाज की सेवा और विकास के लिए किये जाते हैं उनमें कहीं भी हीनदृष्टि न हों। मानव समाज में धर्म के सभी लक्षण दिखाई ही न दे वरन धर्म में सभी लक्षणों को व्यावहारिकता में लाया जाये और धर्म-लक्षण वाले मनुष्य को श्रेष्ठता मिले। धर्म तो मनुष्य को जोड़ने के लिए है। उसका परम ध्येय ही विश्व-बन्धुत्व है। मानव जाति के इतिहास में यदि किसी शक्ति ने समस्त प्राणियों के प्रति सद्भाव और त्याग का सबसे अधिक प्रदर्शन किया है तो वह धर्म की शक्ति ही रही है। यदि किसी शक्ति ने मानव हृदय को मुक्त व्योम के समान सर्वव्यापक बनाने की कोशिश की है तो वह धर्म की शक्ति ही रही है।

वस्तुतः प्रत्येक धर्म सत्य का मार्ग प्रशस्त करता है और यह कार्य संयम, विवेक, नीतिपरायणता जैसे सूक्ष्म तत्वों के माध्यम से होता है। जब मानव शुद्ध मन में सूक्ष्म तत्वों की अनुभूति करता है तो वह पाता है कि सभी धर्म सत्य-परायणता का पाठ पढ़ाते हैं। सभी धर्म वास्तव में एक ही लक्ष्य पर पहुँचते हैं और वह लक्ष्य है सत्य। यह सत्य एक वृत्त का केन्द्र बिन्दु है और सभी मनुय धर्म के प्रकाश में परिधि के विभिन्न बिन्दुओं पर खड़े हैं। परिधि से केन्द्र को

जोड़ने वाला सीधा मार्ग एक ही है, जो त्रिज्या के सहारे आगे बढ़ता है। त्रिज्याएँ ही वह अलग-अलग मार्ग अर्थात् भिन्न-भिन्न धर्म के मार्ग हैं। इस मूल मंत्र के परे रख मनुष्य सब अपने मन में अहं आक्रोश का भाव ले आता है, वह अपने को दूसरों से श्रेष्ठ तथा अपने त्रिज्या रुपी मार्ग को उत्कृष्ट बताता है, यही वह कष्टप्रद और निम्न भाव है जो मानव को अपने पथ से च्युत कर देता है। धार्मिक संकीर्णता वाला ऐसा व्यक्ति अपने को श्रेष्ठ तथा अन्य को निम्न बताकर सर्वत्र अपनी श्रेष्ठता का ढिंढोरा पीटता है। वह छल, बल, लोभ-लालच में फंसा कर अन्य धर्मावलम्बियो को अपने धर्म में लाने की चेष्टा करता है। वह अपने साधनों तथा प्रभाव का दुरुपयोग कर, एकत्र किये गये देशी-विदेशी धन से धार्मिक समाज में धार्मिक संतुलन बिगाड़ने की दिशा में परोक्ष-अपरोक्ष रुप से प्रयासरत रहता है। अन्ततः वह राजनैतिक सम्बन्धों का लाभ ले, राष्ट्रद्रोही होता है। उसकी अवस्था उसके दोहरे चरित्र के साथ मात्र एक राष्ट्र विध्वंसक तथा समाज विरोधी भाव को ही उजागर करती है। इसलिए आज आवश्यक है कि हमें प्रत्येक समाज और धर्म के मानने वालों को विज्ञान के आलोक में समझना होगा कि उनमें मन में पैठ बनाए धार्मिक कुसंस्कार पूर्णतः अस्त हो जायें। उनकी आत्मा का दीपक ऐसे आलोकित हो कि वह स्वयं ही कहने लगें :-

गगन गरजे जहाँ सदा पावस झरे,
होत-झनकार नित बजत तूरा।
वेद-कतेब की गम्म नहीं।
तहाँ कहै कबीर कोई रमै सूरा॥

अर्थात् जहाँ ब्रह्म आकाश गरजता रहता है, जहाँ अमृत की वर्षा होती रहती है, जहाँ वेद और कुरान की गति नहीं है, वहां कोई सूरमा ही रमण करता है।

ईश्वरानुभूति का रंग ही कुछ अलग है, जहां धर्म की नहीं, धर्मके सत्तत्व की अनुभूति होती है। यही वह तत्व अनुभूति है, जिसे पकड़कर कबीर और नानक खुदी से जुदा हो खुदा से एकाकार हो गये। यह परम निगूढ़ आत्मानुभूति ऐसी है जिसे किसी भी धर्म की लकीर को पकड़कर प्राप्त करना असंभव है। यह मात्र मानवता की भलाई की राह पकड़ने वाले परमयोगी को ही प्राप्त है, जहां पर बाह्य परिवारों की पकड़ शून्य हो जाती है। जहां मनुष्यता के मध्य के सभी विभेद समाप्त हो जाते हैं। जहाँ पर मात्र आत्मानन्द की अनुभूति ही रहती है। जहाँ समस्त अंधकार मिट जाता है, रहता है तो मात्र आत्मा का आलोक ज्ञान का आलोक। शील का आलोक। शब्द का आलोक। सबद की चोट लगी मोरे मन में,

बेध गया तन सारा।
औषध मूल कछू नहिं लागे,
का करै बैद विचारा॥
सुरनर मुनि मन पीर औलिया,
कोई न पावै पारा।
साहेब कबीर सर्व रंग रंगिया,
सब रंग से रंग न्यारा॥

पता : ए.एस.३०२, सुमंगल अपार्टमेंट, लिंक रोड, बिलासपुर (छ.ग.)

"पिता"

आप की व्याख्या में संसार समा जाता है।
आप के नाम पर ब्रह्माण्ड भी झुक जाता है॥
दे के हमें रोटी वो अन्नदाता हो जाता है।
पेट पालन हेतु पिता देवता बन जाता है॥
असार है संसार नश्वर बस पिता को छोड़कर।
पुत्र पर खुशियां लुटाता त्याग सब कर जाता है॥
नाम देकर मान भी सम्मान दे समाज में।
आत्म देकर जो जगत में आत्मज बनाता है॥
पुत्र हों या पुत्रियां जिसे आप गले से लगाता है।
राह की दुधिारियों से पार वो हो जाता है॥
डॉक्टर, इंजीनियर हों अफसर या नेता अभिनेता।
नमन इस महादेव को जो सर्वश्रेष्ठ कहलाता॥

डॉ. रत्नाकर चौबे "त्रिपुण्ड"
युवा साहित्यकार, संस्कृताचार्य एवं रंगकर्मी, सी-१४/३ रिफाईनरी आवासीय परिसर, आगासोद, बीना

२३ जुलाई जयंती

पुण्य स्मरण

भारतीय राष्ट्रवादी, शिक्षक व समाज सुधारक - बालगंगाधर तिलक

- अनिल आर्य

तिलक का जन्म २३ जुलाई १८५६ को ब्रिटिश भारत में वर्तमान महाराष्ट्र स्थित रत्नागिरी जिले के एक गांव चिखली में हुआ था। ये आधुनिक कालेज शिक्षा पाने वाली पहली भारतीय पीढ़ी में थे। इन्होने कुछ समय तक स्कूल और कालेजों में गणित पढ़ाया। अंग्रेजी शिक्षा के ये घोर आलोचक थे और मानते थे कि यह भारतीय सभ्यता के प्रति अनादर सिखाती है। इन्होने दक्खन शिक्षा सोसायटी की स्थापना की ताकि भारत में शिक्षा का स्तर सुधरे।

जन्म से केशव गंगाधर तिलक, एक भारतीय राष्ट्रवादी, शिक्षक, समाज सुधारक, वकील और एक स्वतन्त्रता संग्रामी सेनानी थे। ये भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के पहले लोकप्रिय नेता हुये, ब्रिटिश औपनिवेशक प्राधिकारी उन्हें "भारतीय अशान्ति के पिता" कहते थे। उन्हें लोकमान्य का आदरणीय शीर्षक भी प्राप्त हुआ, जिसका अर्थ है लोगों द्वारा स्वीकृत (उनके नायक के रुप में) इन्हें हिन्दू राष्ट्रवाद का पिता भी कहा जाता है।

तिलक ब्रिटिश राज के दौरान स्वराज के सबसे पहले और मजबूत अधिवक्ताओं में से एक थे, तथा भारतीय अन्तःकरण में एक प्रबल आमूल परिवर्तनवादी थे। उनका मराठी भाषा में दिया गया नारा **"स्वराज्य हा माझा जन्मसिद्ध हक्क आहे आणि तो भी मिळवणारच"** (स्वराज्य यह मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूंगा) बहुत प्रसिद्ध हुआ। उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कई नेताओं से एक करीबी सन्धि बनाई, जिनमें बिपिन चन्द्र पाल, लाला लाजपतराय, अरविन्द घोष, वो. ओ. चिदम्बरम पिल्लै और मुहम्मद अली जिन्नाह शामिल थे।

तिलक ने मराठी में मराठा दर्पण व केसरी नाम से दो दैनिक समाचार पत्र शुरु किये जो जनता में बहुत लोकप्रिय हुए। तिलक ने अंग्रेजी शासन की क्रूरता और भारतीय संस्कृति के प्रति हीन भावना की बहुत आलोचना की। इन्होने मांग की कि ब्रिटिश सरकार तुरन्त भारतीयों को पूर्ण स्वराज दे। केसरी में छपने वाले उनके लेखों की वजह से उन्हें कई बार जेल भेजा गया।

तिलक भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल हुये लेकिन जल्द ही वे कांग्रेस के नरमपंथी रवैये के विरुद्ध बोलने लगे। १९०७ में कांग्रेस गरम दल और नरम दल में विभाजित हो गई। गरम दल में तिलक के साथ लाला लाजपतराय और बिपिनचन्द्र पाल शामिल थे। इन तीनों को लाल-बाल-पाल के नाम से जाना जाने लगा। १९०८ में तिलक ने क्रान्तिकारी प्रफुल्ल चाकी और खुदीराम बोस के बम हमले का समर्थन किया जिसकी वजह से उन्हें बर्मा (अब म्यांमार) स्थित मांडले की जेल भेज दिया गया। जेल से छूटकर वे फिर कांग्रेस में शामिल हो गये और १९१६ में ऐनी बिसेन्ट और मुहम्मद अली जिन्ना के साथ अखिल भारतीय होम रुल लीग की स्थापना की।

तिलक ने मराठी में मराठा दर्पण व केसरी नाम से दो दैनिक समाचार पत्र शुरु किये जो जनता में बहुत लोकप्रिय हुए। तिलक ने अंग्रेजी शासन की क्रूरता और भारतीय संस्कृति के प्रति हीन भावना की बहुत आलोचना की।

सन् १९१९ ई. में कांग्रेस की अमृतसर बैठक में हिस्सा लेने के लिये स्वदेश लौटने के समय तक तिलक इतने नरम हो गये थे कि उन्होंने मॉन्टेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधारों के जरिये स्थापित लेजिस्लेटिव कौंसिल के चुनाव के बहिष्कार की गांधी की नीति का विरोध ही नहीं किया। १ अगस्त १९२० ई. को बम्बई में उनकी मृत्यु हो गयी।

स्वराज्य मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है, मैं इसे लेकर रहूंगा।

२७ जुलाई जयंती

मिसाईल मैन और जनता के राष्ट्रपति : डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

मधुर स्मृति

अब्दुल पकिर जैनुलाअबदीन अब्दुल कलाम अथवा ए.पी.जे. अब्दुल कलाम (१५ अक्टूबर १९३१-२७ जुलाई २०१५) जिन्हें मिसाईल मैन और जनता के राष्ट्रपति के नाम से जाना जाता है, भारतीय गणतन्त्र के ग्यारहवें निर्वाचित राष्ट्रपति थे। वे भारत के पूर्व राष्ट्रपति, जाने माने वैज्ञानिक और अभियंता (इंजीनियर) के रुप में विख्यात थे। इन्होने मुख्य रुप से एक वैज्ञानिक और विज्ञान के व्यवस्थापक के रुप में चार दशकों तक रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) और भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) संभाला व भारत के नागरिक अंतरिक्ष कार्यक्रम और सैन्य मिसाईल के विकास के प्रयासों में भी शामिल रहे। इन्हें बैलेस्टिक मिसाइल और प्रक्षेपण यान प्रौद्योगिकी के विकास के कार्यों के लिए भारत में मिसाइल मैन के रुप में जाना जाने लगा।

इन्होने १९७४ में भारत द्वारा पहले मूल परमाणु परीक्षण के बाद से दूसरी बार १९९८ में भारत के पोखरान-द्वितीय परमाणु परीक्षण में एक निर्णायक, संगठनात्मक, तकनीकी और राजनैतिक भूमिका निभाई। कलाम सत्तारुढ़ भारतीय जनता पार्टी व विपक्षी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस दोनों के समर्थन के साथ २००२ में भारत के राष्ट्रपति चुने गए। पांच वर्ष की अवधि की सेवा के बाद, वह शिक्षा, लेखन और सार्वजनिक सेवा के अपने नागरिक जीवन में लौट आए। इन्होने भारत रत्न, भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान सहित कई प्रतिष्ठित पुरस्कार प्राप्त किये।

जन्म १५ अक्टूबर १९३१ को धनुषकोड़ी (रामेश्वरम् तमिलनाडु) में एक मध्यमवर्ग मुस्लिम परिवार में इनका जन्म हुआ। इनके पिता जैनुलाब्दीन न तो ज्यादा पढ़े लिखे थे, न ही पैसे वाले थे। इनके पिता मछुआरों को नाव किराये पर दिया करते थे। अब्दुल कलाम संयुक्त परिवार में रहते थे। अब्दुल कलाम के जीवन पर इनके पिता का बहुत प्रभाव रहा। वे भले पढ़े-लिखे नहीं थे, लेकिन उनकी लगन और उनके दिए संस्कार अब्दुल कलाम के बहुत काम आए। पांच वर्ष की अवस्था में रामेश्वरम के पंचायत प्राथमिक विद्यालय में उनका दीक्षा संस्कार हुआ था। उनके शिक्षक इयादुराई सोलोमन ने उनसे कहा था कि *जीवन में सफलता तथा अनुकूल परिणाम प्राप्त करने के लिए तीव्र इच्छा, आस्था, अपेक्षा इन तीनों शक्तियों को भलीभांति समझ लेना और उन पर प्रभुत्व स्थापित करना चाहिए।*

अब्दुल कलाम ने अपनी आरंभिक शिक्षा जारी रखने के लिए अखबार वितरित करने का कार्य भी किया था। कलाम ने १९५८ में मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी से अंतरिक्ष विज्ञान में स्नातक की उपाधि प्राप्त की। १९६२ में वे भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन में आये जहां उन्होने सफलतापूर्वक कई उपग्रह प्रक्षेपण परियोजनाओं में अपनी भूमिका निभाई। परियोजना निदेशक के रुप में भारत के पहले स्वदेशी उपग्रह प्रक्षेपण यान एसएलवी ३ के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जिससे जुलाई १९८२ में रोहिणी उपग्रह सफलतापूर्वक अंतरिक्ष में प्रक्षेपित किया गया।

अब्दुल कलाम भारत के ग्यारवें राष्ट्रपति निर्वाचित हुए थे। इन्हें भारतीय जनता पार्टी समर्थित एन.डी.ए. दल ने अपना उम्मीद्वार बनाया था जिसका वामदलों के अलावा समस्त दलों ने समर्थन किया। १८जुलाई २००२को संसद के अशोक कक्ष में राष्ट्रपतिपद की शपथ दिलाई गई। इस संक्षिप्त समारोह में प्रधानमंत्री, अटल बिहारी बाजपेयी, उनके मंत्रिमंडल के सदस्य तथा अधिकारीगण उपस्थित थे। इनका कार्यकाल २५ जुलाई २००७ को समाप्त हुआ। यूं तो अब्दुल कलाम राजनीतिक क्षेत्र के व्यक्ति नहीं थे लेकिन राष्ट्रवादी सोच और राष्ट्रपति बनने के बाद भारत की कल्याण संबंधी नीतियों के कारण इन्हें कुछ हद तक राजनैतिक दृष्टि

से सम्पन्न माना जा सकता है। इन्होने अपनी पुस्तक इण्डिया २०२० में अपना दृष्टिकोण स्पष्ट किया है। यह भारत को अंतरिक्ष विमान के क्षेत्र में दुनिया का सिरमौर राष्ट्र बनते देखना चाहते थे और इसके लिए इनके पास एक कार्य योजना भी थी। परमाणु हथियारों के क्षेत्र में यह भारत को सुपर पॉवर बनाने की बात सोचते रहते थे। वह विज्ञान के अन्य क्षेत्रों में भी तकनीकी विकास चाहते थे।

राष्ट्रपति दायित्व से मुक्ति के बाद कार्यालय छोड़ने के बाद, कलाम भारतीय प्रबंधन संस्थान शिलांग, भारतीय प्रबंधन संस्थान अहमदाबाद, भारतीय प्रबंधन संस्थान इंदौर व भारतीय विज्ञान संस्थान बंगलौर के मानद फैलो, व एक विजिटिंग प्रोफेसर बन गए। भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान तिरुवनंतपुरम के कुलाधिपति, अन्ना विश्वविद्यालय में एयरोस्पेस इंजीनियरिंग के प्रोफेसर और भारत भर में कई अन्य शैक्षणिक और अनुसंधान संस्थानों में सहायक बन गए। मई २०१२ में कलाम ने भारत की युवाओं के लिए एक कार्यक्रम, भ्रष्टाचार को हराने के एक ¥œæà ÷éáà ¥©Pbñ, **"मैं आंदोलन को क्या दे सकता हूँ"** का शुभारंभ किया। उन्होने यहां तमिल कविता लिखने और वेन्नई नामक दक्षिण भारतीय स्ट्रिंग वाद्य यंत्र को बजाने का भी आनन्द लिया।

निधन : २७ जुलाई २०१५ की शाम अब्दुल कलाम भारतीय प्रबंधन संस्थान शिलांग में रहने योग्य ग्रह पर एक व्याख्यान दे रहे थे जब उन्हे जोरदार कार्डियक अरेस्ट (दिल का दौरा) हुआ और ये बेहोश होकर गिर पड़े। लगभग ६.३० बजे गंभीर हालत में इन्हें बेथानी अस्पताल में आईसीयू में ले जाया गया और दो घंटे के बाद इनकी मृत्यु की पुष्टि कर दी गई। ***सौजन्य : ऋषि कुमार आर्य***

संदेश गाय कोई जानवर नहीं है ?

गाय कोई जानवर नहीं है ? गाय एक संस्कृति है, गाय का वैद्यशाला है व हिन्दू ही नहीं सम्पूर्ण मानव जाति की पोशक है। गाय की महिमा पौराणिक व वैदिक ग्रन्थों में बड़े विस्तार पूर्वक वर्णित है। गाय का भारतवर्ष के लिए तो एक वरदान है। प्राचीनकाल से भारतवर्ष को गाय समृद्धिशाली बनाती आई है। हमारे ऋषि-मुनियों ने गाय को अपने आश्रमों में प्रमुखता से स्थान दिया।आज विज्ञान ने भी गाय की महत्वपूर्णता को प्रमाणित कर दिया है। गाय का दूध, घी, मूत्र औषधीय गुणों से भरपूर है। भारत वर्ष की अर्थव्यवस्था में कभी गाय अपना महत्वपूर्ण योगदान देती थी, परन्तु आज किसी को गाय की चिंता नहीं है। जिस गाय को मुगलशासन के समय में भी कत्ल नहीं किया जाता था, आज उसी गाय को बीच चौराहों पर बड़ी निर्ममता से काटा जाता है। जिस धर्म में कार्य को गाय नहीं गौमाता कहा जाता है, उसी धर्म के लोगों के पास गाय और गौशालाओं के लिए एक पैसा नहीं और मंदिर में बैठे पत्थरों के भगवान पर करोड़ों का चढ़ावा चढ़ा रहे हैं। भागवत कथाओं के नाम पर किट्टी पार्टियां कर रहे हैं, इसमें भी लाखों-करोड़ों खर्च कर रहे हैं। पर गाय के लिए एक ढेला नहीं। वे समझते हैं कि ऐसा करने से उन्हें पुण्य प्राप्त होगा, पाप कर्म छूट जायेंगे और स्वर्ग की प्राप्ति होगी। वाह रे! भोले-भाले नादान हिन्दू... तेरी बुद्धि पर तरस आता है। अभी ज्यादा कुछ नहीं बिगड़ा है, समय रहते हिन्दू चेत जायें तो अपनी महाभूल को अभी भी सुधार सकता है। गौपालन करके, गौशालाओं को मदद करके, देसी गाय को शंकर बनने से बचाकर, कत्लखानों से बचाकर, अवारा घूम रही गौओं को गौशालाओं में पहुंचाकर, गाय की विशेषताएँ सम्पूर्ण जगत में प्रचार-प्रसार करके, धर्मगुरुओं पर धन न लुटाकर-सीधे गौसेवा करके। अगर हिन्दू समय रहते उपर्युक्त बातों पर अमल करे तो आज निश्चय ही गौमाता को बचाया जा सकता है और भारतवर्ष गौहत्या के पाप से मुक्त भी हो सकता है।

- ऋषि मुकेश वर्मा

सभा का मुख पत्र हिन्दी मासिक "अग्निदूत" के १३ वें वर्ष में प्रवेश पर समस्त सुधि पाठकों को छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं "अग्निदूत" परिवार की ओर हार्दिक शुभकामनाएँ.

समाचार प्रवाह

वैदिक यज्ञ योग प्रचार समिति रायपुर ने मनाया तृतीय अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

रायपुर। वैदिक यज्ञ योग प्रचार समिति रायपुर के तत्वावधान में तृतीय अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस समारोह वृन्दावन (वातानुकूलित) हॉल सिविल लाईस रायपुर में दिनांक २१ जून २०१७ को अपरान्ह ५ से रात्रि ९ बजे तक बहुत धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि माननीय श्री ताम्रध्वज जी साहू सांसद दुर्ग, विशिष्ट अतिथि श्री दयाराम वर्मा प्रधान आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर, श्री दीनानाथ वर्मा प्रधान योगाचार्य एवं मंत्री छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा दुर्ग, समिति के अध्यक्ष श्री योगीराज साहू द्वारा अध्यक्षता किया गया। कार्यक्रम का संचालन श्रीमति भगवती चन्द्राकर योगाचार्या एवं श्रीमति खेमलता साहू योगार्थी एवं शिक्षिका द्वारा किया गया। अभनपुर जिला रायपुर से पधारे श्री लालजी साहू प्रसिद्ध योगाचार्य द्वारा बहुत ही आकर्षक योग प्रदर्शन किया गया। पं. नंदकुमार आर्य प्रसिद्ध भजनोपदेशक सतना (म.प्र.) एवं ढोलक पर संगत कर रहे श्री भुनेश्वरदास मानिकपुरी द्वारा सुमधुर वैदिक भजनोपदेश का कार्यक्रम अत्यन्त सराहनीय रहा।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री ताम्रध्वज साहू ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि आज पूरे विश्व में योग दिवस का आयोजन किया जा रहा है। वैदिक यज्ञ योग प्रचार समिति अपने गौरवशाली ८ वर्षों से लगातार योग क्लास लगाकर निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर है, जिसके लिए कोटिशः साधुवाद। विशिष्ट अतिथि श्री दयाराम वर्मा जी ने कहा कि आज भारत ही नहीं अपितु १८० देशों में योग दिवस समारोह आयोजित की जा रही है, अत्यन्त उल्लास का वातावरण है। श्री दीनानाथ वर्मा विशिष्ट अतिथि ने कहा कि दुनियां के लाईब्रेरी के प्रथम पुस्तक वेद में योग का उल्लेख है। महर्षि पतंजलि ने योग दर्शन नामक ग्रंथ लिखकर योग को लोकरंजक बना दिया। हमारी समिति प्रातः ५ बजे से ६.३० बजे तक योग क्लास का अनवरत संचालन कर रही है। जिसमें अनेकानेक लोग जुड़े हैं। आत्मा से से परमात्मा से जोड़ने का नाम योग है।

विश्व योग गुरु बाबा रामदेव जी ने आधुनिक योग की गंगा को गली-गली, शहर-शहर बहा दिया। श्रीमति अनिता वर्मा ने लोकगीत के माध्यम सबको भाव-विभोर कर दिया। समिति द्वारा आमंत्रित अतिथियों का शाल श्रीफल व स्मृति चिन्ह देकर सम्मान किया गया। कार्यक्रम पश्चात प्रीतिभोज का आयोजन किया गया, जिसमें तीन सौ से अधिक लोगों ने भाग लिया।

संवाददाता : श्री दीनानाथ वर्मा मंत्री सभा

महर्षि दयानन्द आर्य उच्च. माध्य. विद्यालय टाटीबन्ध रायपुर में अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया

रायपुर। विगत बर्ष की भांति इस वर्ष भी महर्षि दयानन्द आर्य उच्च. माध्य. विद्यालय टाटीबन्ध के विद्यालय प्रांगण में तृतीय अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। जिसमें विद्यालय के सभी शिक्षक/शिक्षिका, छात्र-छात्राएँ सम्मिलित होकर योग प्राणायाम किये। इस विद्यालय के योग शिक्षक श्री संजय कुमार शास्त्री जी के द्वारा विद्यालय के सभी विद्यार्थी को पंक्तिबद्ध कर योग, प्राणायाम कराया गया। साथ ही विद्यालय के प्राचार्य श्री विनोद सिंह, व उप-प्राचार्य श्री पुरुषोत्तम प्रसाद वर्मा द्वारा योग प्राणायाम में सम्मिलित होकर बच्चों को नित्य योग, आसन व प्राणायाम करने के लिए प्रेरणा दिया। विद्यालय प्रांगण में सुबह ८.३० से ९.३० तक विद्यार्थियों के द्वारा योग प्राणायाम किया गया। इसके पश्चात विद्यार्थियों को योग करने के लाभ, उनसे जुड़ी ज्ञान की बातों से अवगत कराया गया। ***संवाददाता : प्राचार्य, म.द.आ. उ.मा. विद्यालय टाटीबन्ध रायपुर***

दानवीर तुलाराम जी परगनिहा "आर्य" के ९२वाँ प्राकट्य दिवस, ग्राम कूंरा (धरसींवा) में सम्पन्न

कूंरा (धरसींवा) । दिनांक २६ जून २०१७ सोमवार को ग्राम कूरा (धरसींवा) में दाऊ तुलाराम जी परगनिहा "आर्य" का ९२वाँ प्राकट्य दिवस अत्यन्त धूमधाम से सम्पन्न हुआ । प्रातः ९ बजे से ११ बजे तक तुलाराम आर्य उ.मा. विद्यालय कूंरा (कुंवरगढ़) में विश्व कल्याण महायज्ञ, आचार्य अंशुदेव जी आर्य प्रधान छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ । यज्ञ के मुख्य यजमान रहे श्री सुभाषचन्द्र श्रीवास्तव एवं श्रीमति श्रीवास्तव, प्रधान आर्यसमाज टाटीबन्ध रायपुर, आर्यसमाज राजेन्द्र नगर कटोरातालाब रायपुर, आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर एवं तुलाराम आर्य उ.मा. विद्यालय लवन की शिक्षिकाएँ एवं सदस्यगण यज्ञ में भाग लिए।

यज्ञ का संचालन पं. कांशीनाथ चतुर्वेदी, पं. मुकेश शास्त्री एवं पं. संजय शास्त्री द्वारा किया गया । पूर्वान्ह ११ बजे से "सुरता" तुलाराम जी कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया जिसके मुख्य वक्ता श्री दीनानाथ वर्मा मंत्री छ.ग. प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा, डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी, श्री दयाराम वर्मा, पं. कांशीनाथ चतुर्वेदी जी रहे ।

श्री दीनानाथ वर्मा जी ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि आज ही के दिन ९१वें वर्ष पूर्व छत्तीसगढ़ के प्रथम स्नातक, तहसीलदार, मालगुजार दाऊ तुलाराम जी परगनिहा ने अपने ग्यारह ग्रामों के १४०० एकड़ जमीन छत्तीसगढ़ जैसे पिछड़े क्षेत्र में नारी शिक्षा एवं आर्यसमाज के प्रचार प्रसार के लिए दान किये। राय साहेब पीताम्बर सिंह परगनिहा के चार पुत्रों में से मझला पुत्र श्री तुलाराम जी का जन्म सन् १८६३ में ग्राम भिंभौरी, जिला दुर्ग में हुआ । शिक्षा दीक्षा रायपुर एवं इलाहाबाद में हुई । तत्पश्चात् सन् १९०५ में वे सागर में तहसीलदार पद पर पदस्थ हो गए । तुलाराम जी परगनिहा जी की दो पत्नियां थी। महासिर बाई एवं कलावती बाई । इनकी दो संतानें थीं । एक पुत्री गुरुदेवी और एक पुत्र मोक्षेन्द्रनाथ । अल्पायु में ही पुत्र के कालकल्वित हो जाने के बाद वे पुत्र वियोग में बीमार रहने लगे । अपने परिवार सहित सन् १९२५ ई. में पैत्रिक गांव भिंभौरी छोड़कर कूंरा (धरसींवा) आ गये। इनका झुकाव प्रारम्भ से ही आर्यसमाज की ओर था। अतः उन्होंने अपनी सारी सम्पत्ति आर्यसमाज संस्था को दान कर दिया। दिनांक २५ अगस्त १९२६ को महानदानी का स्वर्गवाश हो गया।

संगीतमय यज्ञ संचालन के बाद प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं. नन्दकुमार आर्य के मधुर भजनोपदेश हुआ। तत्पश्चात् तुलाराम आर्य उ.मा. विद्यालय कूंरा के छात्र/छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया, जैसे वंदे मातरम्, दयानन्द जी की प्रेरक गीत करमा, सुवागीत, नृत्य सम्पन्न हुआ । कार्यक्रम में कृषक बंधु और ग्राम के गणमान्य व्यक्ति नगर पंचायत अध्यक्ष एवं अनेक पार्षदगण उपस्थित हुए । लगभग दोपहर १ बजे कार्यालय मंत्री श्री दिलीप आर्य द्वारा धन्यवाद ज्ञापन करते हुए शांतिपाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ । तत्पश्चात् दोप. १ बजे से ३ बजे तक ऋषिलंगर प्रीतिभोज सम्पन्न हुआ । जिसमें ५०० से अधिक लोग शामिल हुए। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा। सभा प्रधान के सुमधुर संगीतमय भजनों की अत्यन्त प्रशंसा की गई तथा कई लोगों ने प्रोत्साहन स्वरुप हजारों रुपये न्यौछावर किए।

- दीनानाथ वर्मा, सभा मंत्री

आर्यसमाज सेक्टर-६ भिलाई का निर्वाचन सम्पन्न

भिलाई । आर्यसमाज सेक्टर-६ की २५जून १७ को आयोजित साधारण सभा में नई कार्यकारिणी का गठन सत्र २०१७-१८ हेतु श्री खेलेन्द्र मोहन गिरधर के नेतृत्व में किया गया, जिसमें प्रधान श्री अवनीभूषण पुरंग, मंत्री श्री राजकुमार शास्त्री, कोषाध्यक्ष श्री अरुण ग्रोवर सर्वसम्मति से निर्वाचित हुए।

संवाददाता : रवि आर्य, मंत्री आर्य समाज से. ६ भिलाई

डी.ए.वी. नन्दिनी ने मनाया–धूमधाम से अन्तर्राष्ट्रीय योग–उत्सव

नन्दिनी । डी.ए.वी. इस्पात पब्लिक स्कूल नन्दिनी नगर के विशाल क्रीड़ा मैदान में २१ जून २०१७ को विश्व योग दिवस के पावन अवसर पर योग उत्सव बड़े ही भव्य एवं गरिमामय रुप से समारोह के साथ सम्पन्न हो गया। इस समारोह में विद्यालय के छात्र-छात्राओं सहित बी.एस.पी. के प्रबंधन अधिकारी व कर्मीगण तथा नगरपालिका अध्यक्ष ने अपनी पूरी टीम के साथ शिरकत की। पूरा पंडाल मेंस्थानीय नागरिकों सहित करीब ५०० लोगों ने योग अभ्यास किया। आयुष मंत्रालय भारत सरकार द्वारा जारी प्रोटोकाल के अनुसार सम्पूर्ण कार्यक्रम का निदेशन नगर के केन्द्रीय आयुर्वेद औषधालय के प्रभारी चिकित्सक डॉ. रश्मि शुक्ला ने उत्तम रीति से सम्पन्न कराया।

समारोह को संबोधित करने के लिए अभ्युदय शोध संस्थान के निदेशक पं. राजन महाराज जो कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर के जीवन दर्शन के शोधार्थी एवं योग विज्ञान के साधक हैं उन्हें विशेष रुप से आमंत्रित किया गया था। इस अवसर पर डॉ. रश्मि शुक्ला ने योग के आसनों एवं प्राणायामों से शरीर पर पड़ने वाले सकारात्मक प्रभावों को वैज्ञानिक ढंग से प्रतिपादन करते हुए विशेषकर योग साधक छात्र-छात्राओं को जंकफूड एवं फास्ट फूड से बचने की सलाह दी।

नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती मंजुलता यादव ने आगंतुक अधिकारियों का तथा भाग लेने वाले सभी योग प्रेमियों का आभार माना। अंत में विद्यालय के प्राचार्य श्री राजशेखर पालीवाल ने आयोजन की सफलता से जुड़े लोगों का धन्यवाद करते हुये इतनी बड़ी संख्या में इस आयोजन की ऊँचाईयों पर ले जाने के लिए सभी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। मंच का संचालन का दायित्व विद्यालय के वरिष्ठ संस्कृत शिक्षक कर्मवीर शास्त्री ने निभाया। शांतिपाठ के बाद स्वल्पाहार के साथ ही कार्यक्रम समापन की घोषणा की गई। ***संवाददाता : प्राचार्य, डी.ए.वी. इ.प.स्कूल नन्दिनी***

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रम

छाल । अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर डी.ए.वी. छाल के विद्यार्थियों एवं शिक्षक-शिक्षिकाओं ने योग आसन तथा प्राणायाम का अभ्यास किया। शाला प्रभारी के आशीष डे के नेतृत्व में शाला के तकरीबन ९०० विद्यार्थियों एवं शिक्षक-शिक्षिकाओं ने शाला प्रांगण में सामूहिक योगाभ्यास किया। शिक्षक हीरालाल शास्त्री ने विभिन्न योगमुद्राओं की महत्ता बताते हुए योग से होने वाले लाभ बताए। कार्यक्रम का संचालन शिक्षक श्री अजय शर्मा ने किया।

संवाददाता : अजय शर्मा, डी.ए.वी. छाल

अग्निदूत के ग्राहक सदस्यों की सेवा में

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मासिक मुख पत्र **'अग्निदूत'** के समस्त ग्राहक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क १००/- यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें, जिससे कि उन्हें नियमित रूप से 'अग्निदूत' भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हो, उनसे निवेदन है कि वे अपना दसवर्षीय शुल्क ८००/- रु. भेजें। इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। अन्यथा **इस मास से अग्निदूत भेजना बंद कर दिया जायेगा।** पत्र व्यवहार में अपना सदस्य संख्या तथा पूरा पता पिन कोड सहित अवश्य लिखें। **सभा का भारतीय स्टेट बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाऊन्ट नं. : 32914130515, आई.एफ.एस.सी. SBIN0009075 कोड नं. अथवा देना बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाऊन्ट नं. 107810002857 आई.एफ.एस.सी. BKDN0821078 है, जिसमें आप किसी भी भारतीय स्टेट बैंक/देना बैंक की शाखा से आनलाईन शुल्क जमा कर सभा कार्यालय के दूरभाष नं. 0788-4030972 द्वारा सूचित करते हुए अलग से पत्र लिखकर अवगत कर सकते हैं। अग्निदूत मासिक पत्रिका के सम्बन्ध में कोई भी शिकायत हो तो कृपया श्रीनारायण कौशिक को चलभाष नं. 9770368613 में सम्पर्क कर सकते हैं।**

- दीनानाथ वर्मा, मंत्री मो. 9826363578

कार्यालय पता : 'अग्निदूत', दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) 491001, फोन : 0788-4030973

26 जून2017 को तुलाराम ग्राम कूंरा (धरसींवा) में दानवीर दाऊ तुलाराम जी परगनिहा "आर्य" के 92वाँ प्राकट्य दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया की चित्रमय झलकियाँ

CHH-HIN/2006/17407 जुलाई 2017 डाक पंजी. छ.ग./दुर्ग संभाग / 99/2015-17

भारत

के व्यंजनों का आधार, है, एम.डी.एच. मसालों से प्यार।

MDH

मसाले

असली मसाले
सच-सच

महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड

ESTD. 1919

9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली - 110015, 011 - 41425106 - 07 - 08 www.mdhspices.com

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग के वैदिक मुद्रणालय से छपवाकर प्रकाशित किया गया।
प्रेषक : "अग्निदूत", हिन्दी मासिक पत्रिका, कार्यालय, छ.ग. प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) 491001